

Mahashivaratri Puja

Date	:	14th February 1999
Place	:	Delhi
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi & English

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 15
English	18 - 19
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	16 - 17
Marathi	20 - 26

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

पहले मैं हिन्दी भाषा में बोलूंगी फिर अंग्रेजी में। आज हम श्री महादेव, शिवशंकर की पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। शंकर जी के नाम से अनेक व्यवस्थाएँ दुनिया में हो गई। आदिशंकराचार्य के प्रसार के कारण शिवजी की पूजा बहुत ज़ोरों में मनाने लग गए और दक्षिण में तो दो तरह के पंथ तैयार हो गए एक जिसको शैव कहते हैं और दूसरे जो वैष्णव कहलाते हैं। अब शैव माने शिव को मानने वाले और वैष्णव जो विष्णु को मानने वाले। अपने देश में, विभाजन करने में हम लोग बहुत होशियार हैं। भगवान के भी विभाजन कर डालते हैं और फिर जब उसको एकत्रित करना चाहते हैं तो और उसका विद्रुप रूप निकल आता है। जैसे कि एक 'अयप्पा' नाम का नया निकल आया है मामला। बहुत गलत चीज़ है और उसमें यह दिखाया है कि विष्णुजी ने जब मोहिनी रूप धारण किया तो उनसे एक बच्चा पैदा हुआ शिवजी से, ऐसा कहीं हो सकता है क्या? ऐसी गलत-सलत बातें हमारे देश में बहुत निकल आती हैं और फिर उसी के अलग-अलग संघ बन जाते हैं। कोई न कोई बहाना झगड़ा करने के लिए मिल जाए तो हिन्दुस्तानी बहुत खुश होते हैं। गर उनके पास झगड़ा करने के लिए कोई चीज़ नहीं हो तो वो कोई न कोई कल्पना से ही चीज़ें निकालते रहते हैं। सो ये दोनों ही चीज़ एक-दूसरे से इस तरह से जुड़ी हुई हैं कि जैसे सूर्य से सूर्य की किरण, शब्द से अर्थ, चाँद से चाँदनी। माने ये कि जो

सोपान मार्ग बना हुआ है, जिसे हम सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं, जो मध्य मार्ग है, वो विष्णु का मार्ग है और उस मार्ग से ही हम शिव तत्व पे पहुँचते हैं। तो जो मंजिल है वो है शिव तत्व की, शिव की, और जो रास्ता है वो विष्णु का बनाया हुआ है। इस रास्ते को बनाने में विष्णु ने और आदिशक्ति ने मेहनत की है, इसमें शिवजी का कोई हाथ नहीं, वो तो आराम से अपनी जगह बैठे हैं, जिसको आना है आए, नहीं आना है नहीं आए। सो इस शिव तत्व को प्राप्त करने के लिए हमें इसी विष्णु मार्ग से जाना चाहिए और उसके लिए जो अनेक चक्र हैं उनको पहले ठीक करना चाहिए। जब ये चक्र ठीक हो जाते हैं तब हमारा विष्णु मार्ग खुल जाता है और उसी के साथ फिर हम धीरे-धीरे ऊपर उठने लग जाते हैं।

अब इन चक्रों के बारे में मैंने तो बहुत बताया था पर हृदय में भी एक चक्र है जिसको हम कहते हैं (left heart)। ये हृदय का चक्र नहीं है ये सिर्फ एक तरह से हृदय जो है वो प्रतिबिम्ब है, Reflection है महादेव का। शिवजी का स्थान तो सबसे ऊपर है, बुद्धि से ऊपर, विचारों से ऊपर। ऐसे तत्व को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले हमें इधर ध्यान देना चाहिए कि हमारा हृदय कितना साफ है। हृदय के अन्दर हम अनेक तरह की गंदगी को पालते हैं जैसे कि हम किसी से ईर्ष्या करते हैं। ईर्ष्या करना जैसे कि किसी ने आपके साथ दुष्टता भी

की हो, आपको सताया भी हो, परेशान किया हो, लेकिन उससे ईर्ष्या करने से कोई फायदा नहीं है। आपका हृदय गर स्वच्छ है तो आपका जो आईना है, जिसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ने वाला है, वो साफ रहेगा। लेकिन आपके अन्दर गर ईर्ष्या हो तो वो साफ नहीं रह सकता और उसका प्रतिबिम्ब ठीक नहीं हो सकता। किसी से भी दुश्मनी मोल लेना, किसी के प्रति भी कुछ किसी तरह का हृदय में किल्मिश रखना या बुरी भावना रखना ये गलत बात है। इसीलिए ईसा मसीह ने कहा है कि, सबको माफ करो। माफ करना अत्यंत आवश्यक है। उससे पहले भी और बाद में भी अनेक साधु सन्तों ने यही बात कही कि सबको माफ कर दो। जैसे ही आप माफ कर देते हैं वैसे ही महादेव ऐसी चीजों को अपने हाथ में ले लेते हैं। सबसे जो सूक्ष्म शक्ति है वो महादेव की शक्ति है। और वो उसको फिर पूरी तरह से दण्डित करते हैं, उसको पूरी तरह से punish करते हैं। ये महादेव जो का कार्य है आपका नहीं और इसलिए आपका ईर्ष्या किसी से करना बहुत बुरी बात है। पर सहजयोग में भी मैं देखती हूँ कि ईर्ष्या बहुत है। सहजयोगियों को एक-दूसरे से ईर्ष्या हो जाएगी। अब किसी को trusty बना दिया दूसरे को नहीं बनाया तो इसको ईर्ष्या हो जाएगी। उसमें trusty आदि में कुछ खास नहीं है। ये तो आप लोग जानते हैं, सब झूठी बातें हैं। माँ ने यूँ ही ढकोसला बनाया हुआ है, एक मायाजाल फैलाया हुआ है। पर उसमें भी लोगों का दिमाग खराब हो जाता है और दिमाग किसी का खराब होता है और दिल किसी का खराब होता है। अब मैं क्या करूँ, मेरी खुद समझ में नहीं आता है कि इतना बड़ा कार्य इतने देशों में चल रहा है तो कोई न कोई एक आदमी से ही तो संबंधित हो सकता है।

हालाँकि अब धीरे-धीरे मामले साफ हो रहे हैं पर तो भी, आपको हैरानी होगी कि, अब भी इसकी बड़ी चर्चा होती है, कौन लीडर है। कौन क्या है? दूसरी बात हमारे लिए, हिन्दुस्तानियों के लिए एक वरदान कहो कि ईर्ष्या जो है वो पैसों के मामले में हो जाती है। सहजयोग में भी पैसों के मामले में बड़ी ईर्ष्या है। किसी के पास ज्यादा पैसा है किसी के पास कम पैसा है। सहजयोग के कार्य करते वक्त भी लोग देखते हैं कि कितना पैसा किसको मिलता है और कौन कितना पैसा देता है। जिसका हृदय पैसे में उलझ गया वो सहजयोग के काम के आवामी नहीं क्योंकि उनके हृदय पे जड़वाद (Materialism) छाया हुआ है। किसी भी तरह के, किसी भी तरह के जड़वाद से गर आप ग्रसित हैं तो आपका उद्धार होना बड़ा कठिन है। ये अपने देश की विशेषता है, परदेस में इतना नहीं देखा मैंने, पर यहाँ इसकी विशेषता है। सबसे हम सोचेंगे कि Russia में और Eastern Block में पैसा कम है। पर उनको बिल्कुल परवाह नहीं है। वो पैसे की बात ही नहीं सोचते। उनका हृदय इतना स्वच्छ है, इतना स्वच्छ हृदय है और बड़े स्वच्छ हृदय से ही भक्ति हो सकती है। हम लोग तो जब प्रार्थना करते हैं तब भी हाथ-पैर धोते हैं, नहाते हैं पर हृदय का स्नान कर के गर हम प्रभु से ये कहें कि हमारे अन्दर की ये जो गन्दगियाँ हैं इसको तुम हटाओ और हमें स्वच्छ करो तो ज्यादा अच्छा होगा।

तीसरी बात जो हमारे यहाँ अन्दर है, षड्रिपु जिसे कहते हैं। क्रोध पर कृष्ण ने बहुत जोर दिया है। क्रोध सबसे खराब चीज है, क्रोध से ही सब चीज आती है। एक बार आदमी क्रोध करता है फिर उसको सम्मोह हो जाता है

और फिर वो ये सोचता है मैंने क्यों कहा, मुझे नहीं कहना चाहिए था। ये नहीं वो नहीं। पर वो आपे में नहीं रहता जब उसे क्रोध आता है, क्रोध में वो आपे में नहीं रहता है और आपे से बाहर हो जाता है और जो मुंह में आए सो बकता है। उसका कोई अर्थ नहीं या इतने दिनों को जो मैल अपने हृदय में समाई हुई है वो उसके मुख से निकलती है। इस क्रोध को बचाना चाहिए। ये किसलिए क्रोध आता है। इधर गर चित्त दिया जाए कि हम क्यों क्रोध करते हैं। फिर कुछ लोग हैं वो व्यक्ति मात्र से करते हैं, कोई एक समाज मात्र से करता है। इस तरह से अनेक तरह से लोग क्रोध करते हैं। ये क्रोध हमें अन्दर क्यों आता है? किसलिए हम क्रोधित होते हैं? ये सोचना चाहिए। बहुत से लोगों ने मुझसे कहा कि माँ गर आपके खिलाफ कोई कहता है तो हमें बड़ा क्रोध आता है। मुझे तो हँसी आती है। गर कोई मेरे विरोध में कहता है तो सच कहती हूँ मुझे हँसी आती है? क्योंकि इसमें कोई अर्थ ही नहीं, मेरे विरोध में कहने की ऐसी कौन सी बात है। मैं तो प्यार करने जा रही हूँ। मेरे विरोध में बोल रहे हैं तो करें क्या! पर किसी-किसी की बुद्धि टेढ़ी होती है तो उस पर दया करनी चाहिए। उसको मोचना चाहिए कि इतना महामूर्ख है ये, जो आदमी क्रोध में उतर जाता है, उसकी तरफ दृष्टि जो है वो अत्यंत शालीन होनी चाहिए। इससे उसका भी क्रोध ठण्डा हो सकता है। अपने देश में क्रोध करने वाले अनेक तरह के लोग हैं, उसकी संस्थाएँ हैं जो सिर्फ क्रोध से इसको मार, उसको मार, इसको पीट, उसको पीट और फिर सामाजिक तौर पर भी ये चीज बनती जा रही है।

ये बड़ी भयानक चीज है लोगों को मारना-पीटना और फिर उसके दम पर एक कोई

सेना तैयार करना या फिर कोई मारने-पीटने वाली चीज तैयार करना; ये बड़ी भयानक है। हालांकि गर अपने संरक्षण के लिए कोई आदमी ऐसी चीज रखता है तो उसमें इतना हर्ज नहीं है, पर तो भी गर वो परमात्मा का भक्त है तो उसको कोई जरूरत नहीं। ऐसा आदमी हमेशा संरक्षित है। जिसके अन्दर श्री महादेव का वास है उनको कौन हाथ लगा सकता है? उनको कौन नष्ट कर सकता है? कुछ भी करो, कितना भी उनको सताओ; तो भी वो इन्सान नष्ट नहीं हो सकता। लेकिन जो उनको सताएंगे वो ही नष्ट हो जाएंगे। जब इस बात का पूर्ण विश्वास आपके अंदर हो जाए कि जो आपको सता रहे हैं वो ही नष्ट हो जाएंगे, अपना दिल, अपना हृदय आप एकदम स्वच्छ रखें। स्वच्छ हृदय में ही ये कार्य हो सकता है क्योंकि शिव का स्थान हमारे अन्दर प्रतिबिम्ब रूप है और जो आईना स्वच्छ होता है उसी में उसका प्रतिबिम्ब पड़ता है। शिवजी का क्रोध एक ही बार होने वाला है, और होता है एक बार, ऐसा लोग कहते हैं। पर मैंने अनेक बार उनको क्रोधित होते देखा। क्योंकि उनका अधिकार है। उनका अधिकार है क्रोध करने का। गर कोई आदिशक्ति के विरोध में कार्य करता है तो शिवजी का हाथ बड़ा लम्बा है। कुछ भी करो वो मानते ही नहीं उन्हें ठिकाने लगा ही देते हैं। क्योंकि वो जानते हैं आदिशक्ति जो है वो तो कुछ नहीं करेंगी। वो तो किसी को दण्डित नहीं करेंगी, वो तो सबको माफ कर देंगी। तब उनका हाथ इतना लम्बा है कि जिसकी कोई हद नहीं और जब वो हाथ चलता है तो फिर कोई नहीं रोक सकता। उनसे आखिर कौन बोले, उनके आगे भी मर्यादाएँ हैं जिसको आप उठा नहीं सकते, बढ़ा नहीं सकते।

इस तरह से आपको समझना चाहिए कि अपने वैयक्तिक जीवन में सहज योग में आपको शिवजी का ही अनुसरण करना है, क्योंकि नहीं करोगे तो पहली चीज़ है दिल (Heart) की बीमारी हो जाएगी। यह पहली चीज़ है दिल (Heart) की बीमारी हो जाएगी। I like it, I don't like it. इसमें दो तरह से खेल होता है। एक तो अति क्रोध से Heart पकड़ जाता है और दूसरा है कि क्रोध के बाद पश्चाताप हो तो आपके एन्जाइना की बीमारी हो जाती है। इस प्रकार दोनों ही चीज़ें बेकार हैं। पर कहने से क्रोध नहीं जाता। ये तो एक शराब जैसी चीज़ है। आदत हो जाती है क्रोध करने की, उसी में मजा आता है। बस मुँह फूलने लग जाएगा और गुस्सा आने लग जाएगा। आप उसको कंट्रोल नहीं कर पाएंगे। तो मैंने ये सोचा कि गर शीशे के सामने बैठकर आप क्रोध करें, अपने ऊपर, आपको को दो चार सुनाएं और शीशे के सामने बैठकर ये कहें कि मेरे जैसा महामूर्ख कोई नहीं, तब ये क्रोध शायद ठण्डा हो जाए। ये भी मैं शायद ही कह रही हूँ क्योंकि कभी-कभी ये समस्याएं इतनी उलझी होती हैं कि उसको सुलझाना बहुत मुश्किल है। आगे चलकर देखा गया है कि जितना हम किसी चीज़ को ध्यान देते हैं और उस चीज़ के ऊपर, हम जिसको कहते हैं, प्रतिक्रिया (react) करते हैं। किसी ने कुछ कहा, फ़ौरन reaction हो गया। ये प्रथा ज्यादा विदेश में है। जैसे कि अब ये (Carpet) कालीन बिछा हुआ है, फ़ौरन कह देंगे कि I don't like it, I like it? ये कौन होते हैं आप कहने वाले। हरेक चीज़ को आजकल की फ़्रैशन है, हरेक आदमी जैसे कोई बड़ा भारी चिकित्सक है जो कहेगा कि मुझे पसन्द है मुझे पसंद नहीं। ये कहना ही नहीं चाहिए, ये कहना ही आपके आज्ञा का लक्षण है। आप अपने को

समझते क्या हैं कि आप उसको कहते हैं ये मुझे पसंद है ये मुझे पसंद नहीं। कोई भी चीज़ को पसंद करने न पसंद करने का आपको कोई अधिकार नहीं। किसी बिचारे ने बढ़िया तरीके से, समझ लीजिए, आपके लिए फूल दिया तो आप कहेंगे साहब मुझे ये फूल पसन्द नहीं। उसके पीछे छिपी हुई उसकी भावना को आप इसलिए नहीं समझ पाते कि आपके अन्दर शिव तत्व नहीं। एक छोटी सी भी चीज़ हो, गर किसी ने गरीब ने आपको दी है तो उसको आप उसकी भावना को पीछे समझ नहीं पाते। किस प्रेम से वो चीज़ लाया? इसके लिए हमारे यहाँ सुदामा का उदाहरण दिखाया गया है कि वो कुरमुरे लेकर पहुँचे थे और उनका कितना मान श्रीकृष्ण ने किया! कोई चीज़ जो प्रेम भाव से देते हैं वो ऐसा ही है जैसे कि एक शीशे को आप पारस पीछे से लगा दीजिए, चमक जाता है। ऐसी ही चीज़ है, गर आपके अन्दर भावना बहुत सुन्दर हो अच्छी हो, पर पैसा नहीं हो तो आप कोई छोटी सी चीज़ भी उनको लेकर दे दें तो दूसरे को सोचना चाहिए, आहा! क्या बढ़िया चीज़ है! किन्तु इस भावना से मनुष्य के अन्दर एक सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त होती है जिसको कहना चाहिए कलात्मक, जिसमें कला का प्रादुर्भाव होता है। जिसमें कला दिखाई देती है? तो आप समझते हैं कितनी कलात्मक चीज़ है, ये कला है प्रेम की कला। ये प्रेम की कला है। इस कला से आप देख सकते हैं कि इस मनुष्य में कितना प्यार है! कितना मोहब्बती है! कितना प्रेम करने वाला है! कितना सज्जन है! कितना अच्छा है! जब आप ये चीज़ देखना शुरू करेंगे, तब आपकी नज़र अपने ऊपर जाएगी और आप ये सोचेंगे मैं क्या हूँ? मुझमें इतना प्यार है? मुझमें इतनी सज्जनता है? मुझमें ये अच्छाइयाँ हैं कि मैं

ऊपरी जुबानी जमा खर्च करता हूँ और लोगों को भुलावे में डालता हूँ। वास्तविकता में हम अपने ही को भुलावे में डालते हैं। जब हम गलत काम कर रहे हैं, गलत तरीके से रह रहे हैं, जब हमारे जीवन में पूरी तरह की गलत-गलत धारणाएँ बनी हुई हैं, तो हम किसी को भी सुख नहीं दे सकते और अपने को तो बिल्कुल ही नहीं दे सकते। इसलिए स्वार्थ की दृष्टि से भी स्वार्थ शब्द बड़ा सुन्दर है। 'स्व' का अर्थ जानना चाहिए। स्व माने आत्मा, उसका आप अर्थ जानिए। अर्थ जानने के लिए शिवजी की पूजा लोग करते हैं। पर मैंने देखा कि शिवजी की पूजा करने वाले लोग बड़े गुस्से वाले, बड़े क्रोधी, बड़े कंजूस और न जाने क्या-क्या होते हैं। शिवजी जैसे दाता कोई नहीं शिवजी जैसे प्रेम करने वाले जो ये प्यार का स्रोत हैं, जो आज बह रहा है, ये शिवजी के चरणों की लीला है। उन्हीं की वजह से ये कार्य हो रहा है कि मनुष्य प्यार में डूबा जा रहा है। सहजयोग के बाद जब आपकी स्थिति वो हो जाती है तो, आप जीवात्मा कहना चाहिए या आपके Attention जो हैं, चित्त जो हैं, वो शिवजी के चरणों में लीन हो जाता है और शिवजी के चरणों में लीन होते ही क्या होता है कि आपके अन्दर जो पंचतत्त्व के गुण हैं वो भी बिल्कुल सूक्ष्म हो जाते हैं।

मैंने आप लोगों से पहले चार तत्वों के बारे में बताया था पर पाँचवा तत्व जिसे कि Eather कहते हैं अंग्रेजी में, उसके बारे में नहीं बताया। अपने यहाँ आकाश कहते हैं। आकाश तत्व का ये है कि जब मनुष्य सूक्ष्म स्थिति में जाता है तो उस सूक्ष्म आकाश को भी प्राप्त करता है। वो आकाश जो कि eather को चलाता है। उस आकाश को चलायमान भी करने की जरूरत नहीं। गर किसी को कोई तकलीफ

होती है, कोई परेशानी होती है तो वो सब जगह व्याप्त है। हर जगह वो आकाश तत्व जो तत्व मैं कह रही हूँ, व्याप्त है। फौरन आपका असर वहाँ पहुँच जाता है जहाँ जरूरत होती है। बड़े कमाल की बात है, पर होता है और हुआ है और इसी को लोग चमत्कार कहें पर ऐसी बात नहीं है। सहजयोग में गर आप शिव तत्व में जागृत हो जाएं तो आपके अंदर के जितने सूक्ष्म-सूक्ष्म, सूक्ष्मतर कहना चाहिए, जो भाव हैं और स्थिति है वो जागृत हो जाती है।

इसलिए चाहिए कि हम लोग पहले अपने दिल को साफ करें। अब दिल के साफ करने में मैंने आपसे तीन रिपुओं की बात कही। अब चौथा रिपु जो हमारे अन्दर है। वो है मद। मद माने घमण्ड। जब औरतों में घमण्ड आ जाता है तो वो आदमियों की चाल चलती है। फिर वो औरतों जैसे नहीं चल सकती घमण्ड में। हम माने बहुत हम कोई विशेष, हमारी कुछ तो भी ज्यादा या तो पैसे वालों की लड़की है, या सुन्दर है, या सुशिक्षित है या चाहे जिसकी भी बात है। किसी भी बात से अगर घमण्ड आ जाए तो औरत जो है वो आदमी जैसे चलने लगती है। और जब आदमी को घमण्ड आता है तो औरतों जैसे चलने लगता है, माने बनता ठनता है बहुत शीशे के सामने घण्टों बैठा है, बाल बनाता है, ये करता है वो करता है। सब औरतों के धंधे करता है। बनना ठनना औरतों का काम है। चलते वक्त भी सीधे नहीं चलता, एक विशेष रूप से चलता है। गर पीछे देखो तो लगेगा कोई औरत चली जा रही है मर्दाना कपड़े पहन के। सो जब आदमी के अन्दर ये चढ़ जाता है मद तो कहते हैं न मदमस्त हुए, तो मदमस्त हुए तो डोलने लग जाते हैं हाथी की जैसे। उनका सारा ही ढंग अलग अलग हो जाता है। वो बात करेंगे

तो, बात नहीं करेंगे तो, बैठेंगे तो, हर चीज में ये दिखाई देता है कि इनके कोई न कोई घमण्ड है। अब समझ में नहीं आता कि किस चीज का घमण्ड इनको चढ़ा हुआ है। कौन सी चीज से अपने को विशेष समझ रहे हैं। ये सारी ही चीजें तुच्छ हैं। इसका कोई अर्थ ही नहीं है। सहज में इसका कोई अर्थ नहीं है। इसलिए ऐसी चीजों में विश्वास कर लेना कि हम कोई विशेष हैं तो आप शेष ही रह जाते हैं विशेष नहीं रह जाते शेष ही रह जाते हैं। मतलब ये है कि अपने बारे में कोई सी भी ऐसी कल्पना कर लेना कि हम बड़े रईस हैं या हम बड़े ये हैं। अब तो गरीबों को भी घमण्ड हो गया है, दलितों को भी घमण्ड हो गया है, कुछ समझ नहीं आता! वो जो भी हो वो हम हैं। इस तरह से लोग बातें करते हैं। आप स्वयं साक्षात् क्या हैं? एक ईश्वर भक्त, परमात्मा को मानने वाले सहजयोगी हैं। आपको इस तरह से अपने बारे में सोच लेना, आनन्द से परे होना

1 है, क्योंकि शिव-शक्ति जो है आनन्द विभोर मनुष्य को करती है। मनुष्य आनन्द में मस्त होने के लिए शिव की भक्ति करता है। पर मैं देखती हूँ अधिकतर शिव भक्त जो होते हैं, बड़े सड़ियल लोग होते हैं। उनसे कोई बात भी नहीं कर सकता, फायदा क्या है? शिव की भक्ति करते हो, जो नटराज साक्षात् सारे कला का प्रादुर्भाव करने वाले जो अत्यंत आनन्दी और आनन्द के स्वरूप हैं, उनके आगे ये शिवभक्त, इनको शिवभक्त कैसे कहा जाए? गले में इतना बड़ा बड़ा लिंग लटकाते हैं जिससे दिल का दौरा (heart attack) आता है। उसकी क्या जरूरत है। आप स्वयं साक्षात् लिंग स्वरूप खोही हैं। वो न होते हुए वो जो कार्य करते हैं कि हम शिवभक्त हैं। लगे लड़ने शिव भक्ति करके और

उसके अलग-अलग चिन्ह हैं। तार शिव भक्त होगा तो ऐसे ऐसे चन्दन लगाएगा। अगर विष्णु भक्त होगा वो ऐसे लगाएगा। अरे भई इसका क्या अर्थ है? ऐसे लगाने का अर्थ है हम उर्ध्वगामी हैं। ठीक है आप ऊपर चढ़ रहे हैं उर्ध्वगामी और पहुँचकर के आप शांत। दोनों ही लगाना चाहिए और नहीं तो लगाओ ही मत। इसका कोई अर्थ होना चाहिए कि जिस चीज को प्राप्त करने जा रहे हैं, उसका ये सोपान मार्ग है। जिस रास्ते से आप गुजर रहे हैं इसमें से एक-एक गन्दी चीजों को छोड़ते जाते हैं। दूसरों को भला-बुरा कहने से पहले अपने को भला-बुरा कहना सीखिए। मैं ऐसी हूँ। मैं वैसी हूँ। अपने को कहिए, जब आप अपने को कहना शुरू करेंगे तो, आप देखिए, सारे भूत भाग जाएंगे। क्योंकि ये सारे भूत हमने इकट्ठे किए हैं, खुद ही सोच-सोच के, अपनी आज्ञा से। अपनी आज्ञा से भूत इकट्ठे होते गए, दिमागी जमा खर्च हो गया और आदमी बहुत क्लेशदायी दुखदायी हो जाता है और वो दुखदायी उसको भी दुविधा ही करता है। आप किसी को दुख देकर सुख नहीं पा सकते। उसका जरूर असर आना है। चाहे आप पत्थर हों, पर उसका असर आता है। और उसका असर ये-ही आता है कि आदमी बड़ा दुखी हो जाता है। ये तो एक माँ की बात है कि वो आपके सुख की बात करती हैं। आपको जिससे सुख मिले, जिससे आपको संतोष मिले, जिससे आपको शांति मिले, जिससे आपको प्यार मिले और दुनिया में एक आप सज्जन इन्सान हो जाए। ये एक तो माँ का तरीका है।

पर शिव का ये तरीका नहीं। शिव एक हृद तक चलते हैं नहीं तो ऐसा तड़ाकते हैं कि मैं घबराती रहती हूँ कि अब ये आदमी किधर

जा रहा है। अब इसका होगा क्या? ये कहाँ पहुँचेंगे? ये क्या कर रहे हैं? उनको ये नहीं, उनके अन्दर ये नहीं है कि चलो भई इनको, ये बहुत खराब हैं बुरे हैं तो माफ़ कर दें। हाँ माफ़ करने योग्य हो तो माफ़ करते हैं। जो उनकी बहुत तपस्या करता है उनको भी वो वरदान देते हैं। पर जो आदमी मूलतः 'basically' जो ठीक नहीं होना चाहता उसको वो ठीक कर देते हैं। ये बात सही है इसलिए उनसे डरना भी चाहिए। उनको भयंकर भी इसीलिए कहते हैं कि जब बिगड़ते हैं तो वो किसी को भी नहीं छोड़ते। पर उनका सबसे ज्यादा जो बिगड़ना है वो तब होता है जब अन्त का, कहते हैं न कि रात्रि ऐसी आएगी कि सब नष्ट हो जाएगा। उस समय वे अपने क्रोध से सब चीज़ नष्ट करते हैं। ये समय तब आता है क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि ये आखिरी निर्णय है, last judgment है। इसमें आप कौन से रास्ते पे जाते हैं, कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, ये सब पूर्णतया आपके अन्दर लिखा जाता है। आपका जैसे कच्चा चिट्ठा बन जाता है और उसी के अनुसार आप चाहे स्वर्ग में जाएं और चाहे आप नरक में जाएं। नरक में भेजने वाले तो शिवजी हैं, मैं नहीं। मुझे कोई मतलब नहीं नरक से। लेकिन शिवजी को है वो खींच के आपकी टांग आपको नरक में डाल देंगे। फिर आप ये न कहें मैं तो माँ का बड़ा भक्त हूँ और मैं माँ को मानता हूँ, तो मुझे क्यों ये ऐसा हो गया? इसका कारण मैं नहीं हूँ। जिसने एक बार मुझे माँ कह दिया उसके लिए मैं कभी कुछ बुरा नहीं सोचती। पर, शिवजी की मर्यादाएं गार मैं हूँ तो मेरी मर्यादाएं भी वो हैं। पर इस मामले में सबका दोनों का स्वभाव बिल्कुल विपरीत होने के कारण आपको बहुत समझ करके रहना है। ईसा मसीह में भी जो ग्यारह रूद्र हैं, वो भी

ये ही हैं। रूद्र के जो भावना है वो भी शिवजी के ही स्वरूप हैं। इसीलिए बहुत संभल के आपको रहना चाहिए। इसके बारे में आप को इसलिए warning चेतावनी देनी है कि सहजयोग में भी लोग आते हैं, कोई पैसा कमाता है, कोई बुराई करता है, कोई खराबी करता है, कोई अन्याय करता है, ऐसे लोग तो झटक जाते हैं, निकल जाते हैं। पर निकलते ही साथ शिवजी की कक्षा में आ जाते हैं। फिर मुझे खबर आती कि वो दिवालिए हो गए, वो ऐसा हो गया, वैसा हो गया। मैंने कहा भई अब मुझे मत बताओ। जब वो खुद ही छोड़ के भागे अपने संरक्षण से तो उसे कौन बचा सकता है? इसलिए आपको चाहिए कि आप अपना संरक्षण शिव में खोजें, माँ में तो है ही संरक्षण, लेकिन शिव में खोजना चाहिए। उसके लिए ये जो मैंने अभी आपको बताया ये पांच चीज़ें हैं। इन पांच तत्वों में जो सूक्ष्म चीज़ है उसको प्राप्त करना है। उसको प्राप्त करने के लिए आपको ध्यान करना जरूरी है। जो लोग ध्यान करते हैं वो अलग ही दिखाई देते हैं और जो लोग ध्यान नहीं करते वो अलग दिखाई देते हैं। इसमें कोई शक नहीं। अब जो लोग ध्यान करते हैं पर ध्यान में मन नहीं, ध्यान में प्रवृत्ति नहीं, ध्यान की समझ नहीं, ध्यान में सूझ-बूझ नहीं और उसके प्रति एक आलस्य हो तो भी वो ध्यान फलीभूत नहीं होता, उससे कोई फायदा नहीं होता। ऐसा ध्यान हो, जिससे अंग-अंग आपको जो है वो खुश हो जाए। जिससे आनन्द की वर्षा हो।

शिवजी का पहला और महत्वपूर्ण जो हिसाब किताब है वो ये है कि वो आपको आनन्दित करते हैं, पुलकित करते हैं। उनके नाम स्मरण से ही मनुष्य को आनन्द मिलना

चाहिए। पर उससे उल्टा होता है। उसके विरोध में ही लोग रहते हैं। जो होना चाहिए वो नहीं होता है। ये मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिनको हम शिव के भक्त समझते हैं वो इस कदर करके सूखे कैसे हो सकते हैं? हो ही नहीं सकते। इसमें एक कारण और भी है कि जो बहुत ज्यादा कार्य में रत रहते हैं, बहुत ज्यादा, वो (right sided) आक्रामक हो जाते हैं। जब वो आक्रामक बहुत हो जाते हैं तो शिव से वंचित हो जाते हैं, शिव से हट जाते हैं। और शिव फिर अपना असर दिखाते हैं। अब आपको पता है कि शिवजी की बहन सरस्वती हैं। जो सरस्वती की पूजा करते हैं। माने जो पढ़ते हैं, लिखते हैं, ये सब ज्ञान व्यान इकट्ठा करते हैं और इसके अलावा कला में बहुत रुचि रखते हैं, ऐसे जो लोग हैं कला की ओर जिनकी रुचि है ऐसे लोग जो हैं जो सरस्वती की पूजा करते हैं उनकी वन्दना करते हैं, उनको सबसे पहले ये जानना चाहिए कि ये शिवजी की बहन हैं। और आप जानते हैं बहन का रिश्ता बड़ा जबरदस्त होता है। अगर आप इनकी बहन को कहीं प्रवचन करें या उससे कोई बुरे गुण ले लें या बुरी बातें करें, जैसे कि बहुत से लोग हैं गन्दी गन्दी किताबें लिख देते हैं, बहुत से लोग हैं जिनके पास ज्ञान है उसको उल्टा सीधा कर देते हैं, ऐसे लोगों पे शिवजी का हाथ बड़े जोर से पड़ता है। क्योंकि उनकी बहन जो है वो बड़ी महत्वपूर्ण है। उसकी प्रवचन करना माने बहुत ही बड़ा गुनाह है, उनकी दृष्टि में बहुत बड़ा गुनाह है। और आदिशक्ति के लिए भी उनका बहुत कड़क नियम है, इसमें कोई शक नहीं।

अब जो सहजयोगी हैं उनको सबसे पहले अपनी ओर ध्यान देना है। मेरा मतलब नहीं कि शीशे के सामने घण्टों बैठे रहिए। बिल्कुल भी

नहीं। शीशे के सामने बहुत बैठना भी एक बीमारी मानी जाती है। पर ये है कि आप अपनी तरफ नज़र करें और अपनी तरफ नज़र करके देखें कि मेरे अन्दर कौन सी खराबी है? मैं कौन से कौन से गलत काम करती हूँ? अपनी भारतीय संस्कृति में जो कुछ बताया गया है, सीधा रास्ता, उसे लेना है। आजकल नया जमाना आ गया है तो लोग सोचते हैं जैसे भी रहो ठीक है, ऐसी बात नहीं। हिन्दुस्तान में रहते हुए आपको भारतीय संस्कृति के अनुसार पूर्णतया रहना होगा। आपका सारा जीवन क्रम भी भारतीय संस्कृति से जुड़ा रहे क्योंकि भारतीय संस्कृति में शिव तत्व का बड़ा महत्व है। सबसे ज्यादा जो है शिव तत्व का है और शिव तत्व ने ही हमारी मर्यादाएं बनाई हैं कि इस मर्यादा को आपने लाँचा कि आप गए। जो मर्यादाएं हमारी संस्कृति में हैं, वो शिव की कृपा से हैं। वो सारी बातें जो हमें बताई गई हैं आज तक ये ऐसे नहीं करते वैसे नहीं करते, छोटी से लेकर बड़ी तक, ये मर्यादाएं शिव ने बनाई हैं। वो इसका इतना जबरदस्त ख्याल रखते हैं कि जैसे ही आप इस मर्यादा को लाँघ जाते हैं आप पर उसका असर आता है। अब शिव तत्व में इतनी-इतनी गलत धारणा लोगों ने बना दी है। जैसे बहुत से सोचते हैं कि भंग पीने से आप शिव तत्व के हो जाते हैं। बहुत से लोग जो शराब पीते हैं वो सोचते हैं कि शराब पीने से आप शिव तत्व में डूब जाते हैं। बहुत सारी ऐसी गलत-गलत चीज़ें लोगों ने बना ली हैं कि शिवजी के लिए ये चीज़ है। वो शिवजी ने अगर पिया तो शिवजी ने तो विष भी पिया था, आप विष पिएंगे? उन्होंने इसलिए पिया था कि संसार का सारा विष जो है वो खा लें, इसलिए वो धतूरे को खाते थे कि धतूरा जो है इसमें जहर होता है, तो वो खाते थे। इसी

प्रकार आपने सुना होगा कि साईनाथ जो थे वो बहुत तम्बाकू पीते नहीं थे पर वो चिलम में भर कर खींचते थे। वजह ये है कि महाराष्ट्र में लोग बड़ा ही तम्बाकू खाते हैं, हर आदमी, मंत्री भी तम्बाकू खाएगा और उसका चपरासी भी खाएगा और मंत्री चपरासी से कहेगा कि भई तेरे पास तम्बाकू हो तो दे। इस कदर वहाँ पर बिल्कुल तम्बाकू का जोर है हालांकि इतनी तम्बाकू तो वहाँ होती नहीं है पर पता नहीं उन लोगों को तम्बाकू की बीमारी है? इतनी तम्बाकू खाते हैं महाराष्ट्र में लोग। उस तम्बाकू के लिए ही साईनाथ ने ये सोचा कि मैं ही क्यों न इनकी सारी तम्बाकू खा जाऊँ। इसलिए वो तम्बाकू खींचते थे। तो लोगों ने कहा लो साईनाथ भी चिलम पीते थे तो हम भी पीएंगे। जहाँ वो वहाँ ऐसे लोग हो गए जो तम्बाकू इसलिए लेते थे कि इन लोगों की तम्बाकू की जो लत है वो खत्म हो जाए। अब वो चाहे उसको कुछ भी कहिए है तो वो तम्बाकू और तम्बाकू का शिवजी से वैसा सम्बन्ध नहीं है, पर ये जरूर है कि सब वो सारी दुनिया भर की तम्बाकू को खत्म करना चाहते थे। अब समझ लीजिए कि अगर आप देवी हैं, सो देवी का काम है कि सारी दुनिया के दुष्टों को भूतों को खा ले। अब आप भी खाएंगे क्या भूत? देवी का कार्य है कि वो जितने भी आपके पीछे में लगी हुई बीमारियाँ हैं उनको आत्मसात कर ले। तो अब आप लोग करेंगे क्या? ये आपका कार्य नहीं। इसी प्रकार जो कुछ भी साधु-सन्तों ने किया है वो सब करने के लिए तो अभी आपकी ये शक्ति नहीं और न ही आपका कार्य है। आपका कार्य जो है वो अपनी स्वच्छता करना, अपने को ठीक करना। पहले आप उस दशा में पहुँच जाएं तब फिर सब मामला ठीक हो सकता है। पर अगर आप उस

दशा में नहीं जाएंगे तो बेकार है। आपके लिए ये सारे उपलब्ध करने से कोई फायदा नहीं। बहुत सारी चीजें हैं जिसका समर्थन हो सकता है गलत तरीके से, पर हमको अगर सही तरीके पे रहना है और सही मार्ग से चलना है तो सर्वप्रथम अपने हृदय को हम स्वच्छ करें।

ये जो हमें आदतें लगी हैं। ये आदतें भी सारी हमारे हृदय पे असर करती हैं। इसलिए पहले जमाने में ऐसा होता था कि जो भी विद्यार्थी आते थे उनको जंगलों में सोने को कहते थे। वो जंगलों में रहे जहाँ साँप, बिच्छू, मकड़ियाँ, बकड़ियाँ सब लगे, वहाँ रहो। तुम्हारे ऊपर ऐशोआराम न चढ़े। ज्यादा से ज्यादा झोंपड़ी में, जिसको कि गोबर से लीपा हुआ है, उसमें सुलाते थे और बहुत सादगी का जीवन, कपड़े भी बहुत कम पहनने जिसमें कि बच्चों को कपड़ों के प्रति लालच न हो। हमें ये कपड़ा पहनना है, हमें ये जूता खरीदना है, हमें ये खाना खाना है, ये सहजयोगियों को कहना नहीं चाहिए। आपको मालूम है आपकी माँ कहीं भी रह सकती है, कहीं भी सो सकती है, कुछ भी खा सकती है। तो ये जो चीज है अपने अन्दर स्वाद, हमारे यहाँ जो इन्सान देखो, हिन्दुस्तान का, उसको खाने-पीने का बड़ा शौक है। सहजयोगी भी एक-दूसरे को बुलाएंगे खाने पर आइए, काहे को? औरतों को खासकर, कि जैसे कहीं जाओ तो कहें माँ आप हमारे घर खाने पर आओ। मैंने कहा भई खाने का बड़ा गड़बड़ काम है। मैं तो किसी होटल में नहीं खा सकती, मैं कहीं नहीं खा सकती और घर में भी बौर नमक बौर चीनी के रहती हूँ। मेरे अन्दर अस्वाद है, बचपन से अस्वाद है। मैं हर हालत में जो मिले सो खाती हूँ। पर हम लोगों की जो जुबान है, बड़ी चटोरी है। हिन्दुस्तानियों में चाहे वो यू.पी. वाले

हों, पंजाबी हो, चाहे दक्षिण के हों, खाने के मामले में हिन्दुस्तानी बहुत कुशल हैं। और आदमियों को बुद्ध बनाते हैं खाना खिलाकर। हमारे पति को ये पसन्द है, हमारे पति को वो पसन्द है, करे क्या? उसकी गुलामी करेंगी, पति को खुश करेंगी। उनको ये करेंगी। रात-दिन खाने-पीने की बात गार करे तो वो सहजयोगी नहीं। अब बाबा जब मैं वहाँ थी, मिलान में, वहाँ जब प्रोग्राम हुआ, गुरु पूजा में, मैंने खुद खाना बनाया। क्या करें? चार साल तक मैं वहाँ खाना बनाती रही क्योंकि दूसरे लोग अच्छा खाना नहीं बनाते थे। लोग कहते माँ ये तो प्लास्टिक के जैसे बना है। पर हिन्दुस्तानी उसमें विशेष थे, जितने भी हिन्दुस्तानी वहाँ आएंगे सब मुझे मिलना चाहेंगे, उनका विशेष अधिकार है मेरे ऊपर। और दूसरा खाने पीने में बड़ा वो, कि यहाँ का खाना ठीक नहीं। अब एक और नई चीज़ शुरू हो गई हिन्दुस्तानियों में कि साथ जुड़े स्नानागार चाहिए। इनके गुसलखाने घरों में जाकर देखो तो, कैसे इनके माँ बाप रहते थे। इनको साथ जुड़े स्नानागार चाहिए, वो भी अंग्रेजी ढंग का चाहिए। मैं इसलिए आज कह रही हूँ कि इसने बड़ा परेशान कर दिया मुझे। गणपति पुले में उनके लिए अलग से मैंने स्नानागार बना दिए, बाबा अंग्रेजी बना दिए। पर पहले मैंने हिन्दुस्तानी बनाए, मैंने सोचा हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी पसन्द आएगा और अंग्रेजों को अंग्रेजी बना दिया। तो ये फ़रमाते हैं कि नहीं, हमको अंग्रेजी ही चाहिए। बताओ, मैंने कहा लोटा लेके जंगल में जाओ, ये ही तुम्हारा इलाज है। सालों भर ऐसे ही जाते रहे और अब बड़े साहब हो गए हैं attached bathroom के लिए। तो बेचारे अंग्रेजों ने जो परदेसी foreigner थे, बिचारों ने कहा, माँ हमें तो हिन्दुस्तानी अच्छे लगते हैं, क्योंकि बड़ा

साफ़ है। हमें आप हिन्दुस्तानी दे दो। तो मैंने अदल बदल दिया तो बड़े खुश हिन्दुस्तानी कि attached bath मिल गया। शर्म करनी चाहिए! सहजयोगियों को ऐसी बातें करते हुए शर्म आनी चाहिए। आपके बाप दादा तो लोटा लेकर के जाते थे और आपको ये क्या शौक? आपको कोई बीमारी है या कोई तकलीफ़ है? मुझे एक आफ़त में डाल दिया था। पर एक तरह से मेरे दिमाग में बात आ गई कि चलो भई तुम ये लो तुम ये लो। इस तरह से बहाने बाजी और ये करना ये हिन्दुस्तानियों का ही काम है। अब आपको और हैरानी होगी कि जो लोग कबैला आते हैं, सब लोग सबके साथ रहते हैं। बहुत रईस लोग हैं जिनके पास मोटरें हैं सब हैं। लेकिन वो सब पंडाल में सोएंगे। पर हिन्दुस्तानी अपने लिए एक विशेष जगह होगी, होटल में रहेंगे, मोटरों में घूमेंगे। कोई भी तरह की जरा सी भी उनमें त्याग नहीं। त्याग करना सीखा ही नहीं। आज कल हम माडर्न क्या हो गए मेरी समझ में नहीं आता। अब इन लोगों को घरों में नौकर नहीं तो ये attached Bath इसलिए नहीं रखते, एक ही रखते हैं कि बाबा सफ़ाई करना पड़ता है। आप लोगों के नौकर चाकर हैं तो चलो दस दस Bathroom रख लिए। पर ये सब आदतें आपको अपने स्वयं की शक्ति से दूर ले जाएंगी। फ़ालतू चीज़ों में आपका ध्यान जाएगा। फ़ालतू बातों में आपका ध्यान जाना, ये सब आपको एक बहुत ही सर्वसाधारण मनुष्य बनाते हैं।

औरतों के आजकल चला हुआ है कि Beauty Parlour में जाएंगी। शक्ल तो वही रहती है। वहाँ पैसा खर्च करेंगी, वहाँ ये करेंगी। हमारे पूना में ब्राह्मणों की औरतें Sleeveless पहनेंगी, काला चश्मा लगाएंगी और वो मोपेड

पर बैठकर घूमेंगी। मेरे समझ नहीं आया। पूना में जो कि पुण्य पटनम है, ये क्या पुण्याई का इन्तजाम है? इस तरह से हम लोग विदेशी चीज को ले रहे हैं, बगैर सोचे कि इसमें शिव का तत्व कितना है? शिव को देखो नंग-धड़ंग बैठते हैं अपने ऐसे! वो अपने बारात में भी नन्दी पर बैठ कर गए। नन्दी क्यों? क्यों नन्दी उनका शिष्य है, वो जो बोलेंगे उस पर गर्दन हिलाता है। कुछ भी बोलें तो इसलिए नन्दी उनका सबसे प्यारा शिष्य है। अब इस पे बैठ के वो वहाँ पहुँचे विवाह करने, तो पार्वती जी को तो कुछ objection नहीं था पर उसके भाई साहब जो विष्णु थे वो जरा कुछ घबराए कि ये क्या चला आ रहा है दुल्हा मिया? मेरा ये मतलब नहीं कि ऐसे दूल्हे आप बनकर जाइए, ये मतलब नहीं। पर तो भी उसमें ताम झाम दुनिया भर की चीजें करा कर के और वो खर्च में डालने से फायदा नहीं। समझदारी, समझदारी आपका अलंकार है हर चीज को मान्य कर लेना, हाँ ठीक है। जो भी है ठीक है, खाना ठीक है। अब वो किसी के यहाँ खाना खाने जाएंगे और उसकी बुराई करते रहेंगे। मुँह पर नहीं करेंगे घर पे आके करेंगे। अरे क्या खाना बनाया था। किसी के यहाँ अच्छा खाना बना हो तो बीबी से कहेंगे वैसे तुम बनाओ। सारी जिसको 'जिह्वा लोलुप्य' संस्कृत में कहते हैं हिन्दुस्तान में बहुत ज्यादा है। हृद से ज्यादा है। इसको कुछ कम करना चाहिए। ये लोग आपका खाना खाते हैं मैंने कभी नहीं सुना किसी ने शिकायत की है। हालाँकि इन लोगों का अंग्रेजी खाना तो कोई खा नहीं सकता आप लोगों में से। लेकिन इस तरह से अपने ऊपर ये जो लेपन करा रखा है इससे आनन्द में विभोर नहीं हो सकते। शिवजी का जो आनन्द है उसको तो बताने के लिए लोगों ने कहा था कि आप बैराग्य

करो। पहले बैरागी हो जाओ, हिमालय पे जाओ एक टाँग पर खड़े रहो। फिर कपड़े बिल्कुल कम पहनो। नदी में जाके नहाने का और वैसे ही गीले कपड़ों से ध्यान करो। सारे कष्ट शरीर को देते थे, और गुरु लोग अब भी मारते-पीटते हैं। बहुत सताते हैं। ऐसे थोड़े ही बैठे बिठाए पार करा दे। न न, काफी आफत कराते हैं और तब उसके बाद लोग पार होते हैं। पर उनका जो पार होना है वो जम जाता है। स्थिति है। और आप लोगों को ऐसे ही पार करा दिया, अब वो बाकी की पीछे की चीजें तो चल ही रही हैं सब। वो आफत तो चल ही रही है। अब उसको क्या करें? तो उसको ही छाँटना है। इन सब चीजों को जो हमने जोड़ लिया है इसको छाँटना है, खत्म करना है। इसके लिए उपद्रव करने की जरूरत नहीं, कोई वैराग्य लेने की जरूरत नहीं, घर बार छोड़ने की जरूरत नहीं। किसी भी तरह का द्रविडी प्राणायाम करने की जरूरत नहीं। पर एक चीज जरूर है कि अपना ये कम करना चाहिए, कम करते जाना है। धीरे-धीरे कम करो। अस्वाद अन्दर आना चाहिए, बहुत जरूरी है। अस्वाद एक बड़ी भारी चीज है, लोग बहुत नाराज हो जाते हैं। गार खाना उनकी समझ में नहीं आया तो थाली फेंकेंगे कहीं मारेंगे पीटेंगे नौकरों को, पता नहीं क्या। गार आपके अन्दर अस्वाद आ जाए तो बहुत हलवाईयों की दुकानें भी बन्द हो जाएंगी मेरे ख्याल से। बहरहाल मेरा कहने का मतलब ये है कि शरीर का माध्यम नहीं रखना। शरीर के लिए comfort है समझ लीजिए गार आप पलंग पर सोते हैं तो ज़मीन पे नहीं सो सकते तो दस दिन ज़मीन पे ही सोइये। कैसे नहीं सो सकते? अपने शरीर को अपना गुलाम बनाए बगैर नहीं हो सकता। अपने comfort की जो बातें हैं वो

खत्म करना चाहिए। बहुत से लोग हैं, वो बस से नहीं चल सकते, क्योंकि वो मोटर से ही जा सकते हैं। फिर इसको मोटर माँग, उसकी मोटर माँग, इसमें बैठ, उसमें बैठ! पर कोई भी ये नहीं सोचेगा कि चलो आज बस से चलकर देखें क्या होता है? और पहले तो बस भी नहीं थी लोग चलते ही थे। हम जब स्कूल में पढ़ते थे पाँच मील रोज़ सवरे चल के जाते थे। हमारे घर में मोटरें थीं सब कुछ था। ये माँ-बाप थे हमारे। पर हमें खुद बहुत शौक था। पैदल चलो और जूते नहीं पहनते थे, चप्पल नहीं, हाथ में लेके चलते थे क्योंकि vibrations की वजह से अच्छा था ज़मीन पे चलना। आप लोग भी थोड़ा सा जूतों के बगैर, चप्पल के बगैर चलना सीखिए। बहुत जरूरी है। इससे बड़ा फायदा होगा। ज़मीन को भी vibrations मिलेंगे और आपको भी अच्छा लगेगा। हर तरह की चीज़ों में हम लोग बहुत ज्यादा आराम पसन्द हो गए हैं पहले दो चार नवाब लोग जैसे थे वैसे अब हम लोग हो गए हैं, और क्या मिला? उससे कुछ नहीं मिलने वाला। इस सब की गुलामी करते करते सारी ज़िन्दगी बीत जाएगी। इस गुलामी को कम करना है और सिर्फ़ परम शिव के तत्व को अपने अन्दर धारण करना है। उसके लिए जरूरी है कि कोई भी चीज़ महत्वपूर्ण नहीं, आज ये कपड़ा पहनना है तो कल वो कपड़ा पहने तो उसके साथ वो मैचिंग करना है तो उसे साथ वो चाहिए। जो कुछ मिलता है ले लो, जो कुछ आता है उसको पहन लो। कोई हर्ज नहीं है उसमें आप पर कोई आफत नहीं आने वाली। उल्टे आपको समाधान होगा कि मैं समाधानी हूँ। जो भी मुझे मिला वो मैं समाधान से स्वीकार्य करता हूँ। आजकल हमारे वहाँ, पता नहीं यहाँ भी है कि नहीं, वो गैस का सिलेण्डर सोलह

रुपये महंगा हो गया तो औरतें उनकी बड़ी फोटो आई, सब बड़ी सजी-धजी। मैंने कहा ये पन्द्रह रुपये का तो उनके पाउडर ही लगता होगा। ये लोग काहे की वो जा रहे हैं कि हम जा रहे हैं अब हड़ताल पे, काहे के लिए? क्योंकि पन्द्रह रुपए बढ़ गए, और तनखाह आप की इतनी बढ़ गई वो किसी को नहीं दिखाई दिया। हम अपने नौकर को पहले समझ लो कुल बीस-पच्चीस रुपए देते थे, आज ढाई हजार रुपए मिले तो भी वो शिकायत करेगा। उसको कपड़े भी मिलते हैं। सब मिलता है। कितनी भी तनखाह बढ़ जाए तो क्या दाम नहीं बढ़ेंगे। जहाँ तनखाह ज्यादा मिलती है वहाँ दाम बढ़ते हैं। वो सोने की बताते हैं कि जब लंका में सोने की ईंट मिलती है। एक साहब गए सोने की ईंट लेने तो देखा क्या है कि एक दिन उन्होंने काम किया तो उनको दो ईंटें मिलीं। उसके बाद वो नाई के पास गए उनकी शेव करने के लिए तो उसने कहा कितना दाम कहने लगा कि दो ईंटें। जैसे कमाई वैसा खर्चा। एक समझदारी की बात है। तो लग गए उसी के पीछे में कि माँ ये महंगाई हो गई, ये हो गया। मेरे तक शंका आता है। मैंने कहा तनखाह कितनी बढ़ी तुम्हारी? बहुत-बहुत बढ़ गयी फिर तुम्हें महंगाई का रोना कैसा? जब तनखाह बढ़ेगी तो महंगाई तो होनी है। आपकी तनखाह तो बढ़ जाए महंगाई न बढ़े ऐसा कैसे हो सकता है? सर्वसाधारण चीज़ है शर हमें आ जाए तो सामाजिकता में भी हम शिव का तत्व पा लें अब गाँधी जी जैसे थे बड़े ही जबरदस्त। उनके साथ मैं थी, आश्रम में रहते थे। मुझे कुछ नहीं होता था पर सब लोग रोते थे। क्योंकि उनका कहना था कि सबके बाथरूम साफ़ करो। सब मेहमानों के, सब के, वो जमादार नहीं रखते थे। अपने कपड़े खुद धोओ, अपनी थाली खुद

धोओ, खाने में सब खाना उबला हुआ। उसके ऊपर सरसों का तेल आप ले सकते हैं। अब बताइए कितने लोग हिन्दुस्तानी खा सकते हैं वो खाना? बस दो तीन दिन रहते थे और भाग जाते थे। ये हालत थी। अब आप लोगों को भी थोड़ा अस्वाद सीखना चाहिए। अब अस्वाद के लिए ऐसा है, मेरे से पता नहीं कैसे छूटता है, पर आप गार खाना थोड़े दिन उबला ही खाएं तो कैसे क्या रहेगा? कोई माँ अपने बच्चों को ये नहीं कहेगी लेकिन मैं क्या करूँ। इसमें शिव तत्व खराब हो रहा है। सब लोग गार खाने-पीने में लगे रहें तो आपका शिव तत्व गायब हो जाएगा और सारी मेहनत ही बेकार जाएगी। इसलिए खाने पीने में बहुत ज्यादा रत रहना कोई अच्छी बात नहीं। पहले जमाने में लोग एक आध दिन उपवास भी करते थे, कुछ न कुछ अपना त्याग करते थे। पर आजकल बड़ा मुश्किल है ऐसा कहना। आप गार संतुष्ट हो जाएं, समाधानी हो जाएं, तो आपको कोई ज़रूरत नहीं है, बिल्कुल ज़रूरत नहीं है कि आप हर समय खाने-पीने की बातें करें और अपने यहाँ खाने पर बुलाएं।

फिर हमारे यहाँ एक जाति-पाति बहुत है, कि अगर कायस्थ है तो अलग है, या हिन्दू है ब्राह्मण है तो अलग है, फलाने अलग हैं। अब भी है। अब क्या होगा कि जो कायस्थ सहजयोगी हैं वो सब एक हो गए, ब्राह्मण सहजयोगी एक हो गए। अरे भई अब तुम सहजयोगी हो गए अब भी काहे को ये कर रहे हो ब्राह्मण और ये वो। फिर कायस्थ कायस्थों को खाने पर बुलाएंगे और ब्राह्मण ब्राह्मणों को खाने पर बुलाएंगे। अब ये इस तरह की मूर्खता अगर करनी है तो सहजयोग में काहे को आए? सहजयोग में जाति पाति, ये कुछ नहीं। आपकी वो ही नहीं मिटी

जो बिल्कुल मूलतः गलत चीज़ है तो अब क्या मिटने वाला है? शिवजी को था क्या जाति पाति? वो तो एकाक्ष को, किसी की टांगें टूटी हुई है, किसी का हाथ टूटा हुआ है, ऐसे सब लूले वूले लेकर के और अपनी बारात में ले गए थे। वो ऐसे ही शिव तत्व में आपके लिए बहुत ज्यादा ये कटाक्ष रखना कि हम तो भई बहुत विशेष हैं, कि खाना जो ऐसा होना चाहिए, फिर कायस्थों का अलग, ब्राह्मणों का अलग और जातियों का अलग, राजपूतों का अलग, सब का अलग-अलग, अब वो ही खाना खाइए। मुझे कभी भी समझ में नहीं आता, आज तक समझ में नहीं आया, कि ऐसे-ऐसे अलग-अलग खाने में ज्यादा आनन्द आता है तो ये लोग क्यों ऐसा ही खाना मांगते हैं? क्या वजह है? बंगालियों को बंगाली, मद्रासियों को मद्रासी। तो मैंने एक बार कहा कि हमारे हवाई जहाजों में कोई अच्छा स्टेण्डर्ड खाना क्यों नहीं है? कहने लगे माँ ये बताइए कि हिन्दुस्तान का स्टेण्डर्ड खाना कौन सा है? ये तो बात सही है। तुम गार कोई खाना बनाओ तो कहेगा ये तो मद्रासी का है, मद्रासी कहेगा ये क्या बिहारी है, फलाने का, ठिकाने का, ठिकाने का इसलिए सब तरह का खाना खाना आना चाहिए। क्योंकि यहाँ से सब चीज़ शुरू हो जाती है ये बेखरी, जुबान में भी एक मिठास, मधुरता होनी चाहिए। मुस्कुराहट में भी कभी-कभी ऐसा लगता है कि रावण निकल रहे हैं इनके मुँह में से। तो बोलने का क्या कहना, जब बोलते हैं तो लगता है पता नहीं ये कौन चण्डिका बोल रही है कि क्या बोल रही है। औरतें बड़ी तमाशा हैं और आदमी भी बहुत तमाशा हैं। अजीब-अजीब चीज़ें ऐसी बन गई हैं इसमें शिव तत्व कहाँ है? शिव तो प्रेम का एक महासागर है। वो तो राक्षसों को भी उन्होंने

वरदान दिया, राक्षसों को भी जिसने वरदान दिए ऐसे शिव तत्व को हमारे अन्दर गार लाना है तो हम ऐसी छोटी छोटी बातों में कैसे उलझ सकते हैं? ये हम कैसे कर सकते हैं? ये बताइए। जिस तरह से हम एक दूसरे की आलोचना करते हैं, किसी को कोई कहता है ये ऊँचा है, कोई कहता है नीचा है, ये शिव की बात नहीं। शिव के अन्दर प्रेम की धाराएं बह रही हैं और इस प्रेम की धारा में बहते हुए आपको ऐसी उल्टी सीधी बातें करनी नहीं चाहिए। और उससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। आपसी प्रेम, आपसी समझ और आपस का आनन्द उठाना चाहिए। अब ये बात जरूर है कि सहजयोगी आपस में लड़ते नहीं, ये तो मैंने देखा है। आपस में मिलते हैं तो बड़े प्रेम से मिलते हैं, पर तो भी अभी भी ये छोटी-छोटी बातें जो कि वैयक्तिक हैं, खाना-पीना, उठना-बैठना, पहनना, ये ज़रा सा ठीक करना चाहिए। ये गार ठीक कर लें तो बड़ा अच्छा होगा। आपका चित्त जो है वो हृदय की तरफ जाएगा और इन सब चीज़ों में नहीं रहेगा। इन सब चीज़ों में नहीं रहेगा। परदेस में ये बीमारी ज्यादा है, इसलिए कि वहाँ एक से एक निकले हुए हैं, वो बनाते हैं अलग-अलग तरह की चीज़ें। और जिसने वो चीज़ें पहन लीं वो बड़ा भारी अपने को सोचता है, मैं बड़ा रईस हूँ। खासकर इटली में ऐसा बहुत ज्यादा प्रकार है। लेकिन ये सब बातें आपको इसमें नहीं पड़ना चाहिए। आप अपने सादगी से रहो। अपने देश में सादगी से रहने वाले जो होते हैं, उन्हीं का नाम हुआ है, औरों का नाम नहीं हो सकता। पहले जमाने में लोग

गाँधी जी ने कहा खद्दर पहनो, तो लोग बिल्कुल खद्दर पहने। उन्होंने ऐसा बनाया था, खूब ठिकाने लगाया था सबको। पर अब आपको अपने को ठिकाने लगाना है। क्योंकि आप स्वयं आत्मा के प्रकाश, आप स्वयं श्री शिव के शरण में आए हैं। आप खुद को खुद ही ठीक करें, आपको दूसरों को ठीक करने का नहीं है, बस अपने को ठीक करें और धन्य समझे कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं। कितने थे पहले? अरे दो चार थे बिचारे उनको भी लोग मार डालते थे। आज आप हजारों की तादाद में हैं तो इस चीज़ को शुरू करें। बातचीत में मिठास, ऊपरी तरह से नहीं हृदय से, जो भी बात आप हृदय से करें उसको कोई नहीं बुरा मानता। इसलिए हृदय से बात करें। अपने बच्चों से, बड़ों से, जो मर्यादाएं हैं उसको पालते हुए, आप अपने को सुखी बनाने से दूसरों को भी सुखी बनाएंगे। लेकिन आपके अन्दर गार ये आशीर्वाद शिव का न हो कि जिससे आप समाधानी बनें, और कोई चीज़ से हो नहीं सकता। इसलिए अपनी ओर ये भी नज़र रखें कि मैं समाधानी हूँ कि नहीं? मुझे समाधान है या नहीं? मैं छोटी-छोटी बात को लेकर के और दूसरों पर भी बिगड़ता हूँ या उसके नुक्स निकालता हूँ तो कुछ तो भई मेरे अन्दर बहुत बड़ी खराबी है। उस खराबी को देखने से ही आप स्वच्छ हो सकते हैं। जब तक आपको कोई चीज़ दिखाई नहीं देगी आप साफ कैसे करेंगे? इस सफ़ाई की बहुत जरूरत है और इस सफ़ाई से ही आप उस परम पिता परमेश्वर के दर्शन कर सकते हैं, अपने अंदर, और लोगों को भी इसके दर्शन हो सकते हैं।

अनन्त आशीर्वाद।

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

हिन्दी भाषा में मैंने बहुत लम्बा प्रवचन दिया है क्योंकि विदेशी सहजयोगी यहाँ पर बहुत कम हैं। मैं उन्हें बता रही थी कि शिव तत्व आपके हृदय में है और उसका प्रतिबिम्ब किसी एक चक्र पर नहीं है, सभी चक्रों पर है - दर्पण की तरह। जो भी कुछ आपका दिखाई देता है वह इस दर्पण में है, शीशे में आपका क्या प्रतिबिम्ब है? क्या आपका प्रतिबिम्ब स्पष्ट और शुद्ध है? क्या आपने अपने हृदय को शुद्ध किया? प्रतिबिम्ब करने वाले शीशे को क्या आपने साफ किया? यही चीज़ शक्ति को देखनी है।

हिन्दी में मैंने विस्तार पूर्वक बताया कि हमारे (षड्रिपु) छः दुश्मन हैं। एक के बाद एक ये हमें भ्रष्ट करने में लगे रहते हैं। इन छः में से पाँच के विषय में मैंने उन्हें बताया। भारत में छठे दुश्मन-कामुकता-का बहुत अधिक अस्तित्व नहीं है। यहाँ यह बहुत कम है। परन्तु विदेशों में, पश्चिमी देशों में इसका भयंकर प्रभाव है क्योंकि वो लोग सोचते हैं कि कामुकतामय जीवन ही जीने के योग्य है।

इससे परे शिव हैं और इसी कारण हमें समझना चाहिए कि हमारे हृदय में शिव का पूर्ण प्रतिबिम्ब तभी सम्भव है जब हम अपने हृदय को शुद्ध कर लें। दूसरों के प्रति द्वेष, काम भावना, क्रोध, ईर्ष्या-ये सभी प्रतिक्रियाएँ हमारे अन्दर कार्य करती हैं और हमारा हृदय पत्थर की तरह हो जाता है। यह प्रतिबिम्बित नहीं हो सकता। तो यदि आपने शिव का ये गुण प्रतिबिम्बित करना है - कलियुग में ऐसा होना बहुत आवश्यक है यद्यपि बहुत कम लोग शिव की छवि अपने चरित्र में प्रतिबिम्बित कर पा रहे हैं-तो आपको

अपने अन्दर देखना होगा कि आपमें क्या त्रुटियाँ हैं। मेरा चित्त कहाँ जा रहा है। मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं क्या कर रहा हूँ। आपको चाहिए कि अपने को देखें अन्य लोगों को नहीं। पश्चिम के लोग समझते हैं कि दूसरों की आलोचना करना उनका अधिकार है। मुझे ये पसन्द है, यह मुझे पसन्द नहीं है। आप कौन हैं? आप ऐसा क्यों कहते हैं? किसी ने आपके लिए बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया है, उसी के घर में बैठकर उसे कष्ट पहुँचाने के लिए आप कहते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है। आखिरकार आप हैं कौन और अपने बारे में क्या सोचते हैं? निर्णय करने वाले आप कौन होते हैं? मुझे ये पसन्द है और ये नहीं है, ऐसा कहना सहजयोगियों के लिए मना है। ऐसा करना निषिद्ध है।

भगवान शिव को देखें उन्हें सब कुछ पसन्द है, उन्हें साँप भी पसन्द हैं। वे कैसे वस्त्र पहनते हैं? सभी पशु, सभी चीज़ें जो हमें अच्छी नहीं लगतीं उन्हें वे सब पसन्द हैं। अपने विवाह के समय अपनी बारात में वे सभी लूले-लंगड़े लोगों को साथ ले गए। किसी की एक टाँग थी, किसी की एक आँख थी और किसी का कोई अंग टूटा हुआ था। ऐसे सभी लोगों को वो अपनी बारात में ले गए उन्हें ये सब लोग बहुत प्रिय थे और इनकी वे देखभाल करते थे क्योंकि शिव ही आनन्द का स्रोत हैं वे ही हमें आनन्द प्रदान करके आनन्दित करते हैं।

वास्तविक आनन्द तभी सम्भव है जब उनका प्रतिबिम्ब आपके हृदय में हो परन्तु यदि आपका हृदय इधर-उधर की चीज़ों से भरा हुआ है तो यह मलिन हो जाता है-अत्यन्त मलिन दर्पण।

अत्यन्त हैरानी की बात है कि भारतीयों के मुकाबले पश्चिमी सहजयोगी सुख-सुविधाओं का विशेष ध्यान नहीं रखते। यद्यपि वे अत्यन्त भौतिकतावादी वातावरण से आते हैं फिर भी उन्हें सुख-सुविधाओं की बहुत चिन्ता नहीं होती। वे कहीं भी रह सकते हैं। कहीं भी वे प्रसन्न रह सकते हैं। यह बहुत अच्छी स्थिति है जो उन्होंने प्राप्त कर ली है। भारतीय सहजयोगियों को भी व्यर्थ की चीजों पर चिन्त देना छोड़कर यह स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। फ्रिजूल की चीजों पर अपनी शक्ति बर्बाद करने की कोई आवश्यकता नहीं। केवल तभी आपको अपने लिए, अपनी आत्मा के लिए वास्तविक भक्ति प्राप्त हो पाएगी। आज इसी चीज की आवश्यकता है कि आपकी आत्मा आपके चरित्र, आचरण और व्यक्तित्व से झलके। यदि ऐसा हो जाता है तो आपने वह उपलब्धि प्राप्त कर ली है जो सहजयोग आपके लिए करना चाहता था। आज यह बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत महत्वपूर्ण। आप यदि समाचार पत्र पढ़ना चाहें तो नहीं पढ़ सकते क्योंकि परिवर्तित होना आपकी आवश्यकता है। मानव का आत्मत्व, आत्मचेतना और आत्मा में परिवर्तन। और अब समय आ गया है जब यह कार्य हो जाना चाहिए। विकास की यह प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। बहुत से लोग ये प्राप्त कर चुके हैं।

पुराने सन्त और गुरु, सच्चे गुरु अपने शिष्यों को सिर के बल खड़ा करके और अन्य विधियों से वर्षों तक उनकी परीक्षा लिया करते थे। कभी वे उन्हें जल में खड़ा कर देते थे और कभी किसी अन्य तरीके से परखते थे। गुरु शिष्यों को बुरी तरह से पीटते थे तथा उनसे बहुत ही कठोर व्यवहार करते थे और तब किसी एक-आध को आत्मसाक्षात्कार मिला करता था। अब मैंने सोचा कि उन्हें शुद्ध करने में, उल्टे-सीधे वस्त्र पहनाने में, हिमालय पर या गोबी मरुस्थल भेजने में बहुत अधिक समय लगेगा। इसलिए मैंने कहा कि क्यों न उन्हें पहले

ज्योतिष कर दिया जाए? उस प्रकाश में वे अपनी त्रुटियों को देख सकेंगे और स्वयं को ठीक कर लेंगे, वे स्वयं अपने गुरु बन जाएंगे। यह बात सफल हुई। अब आप लोग स्वयं देख सकते हैं कि आप क्या कर रहे हैं, आपमें क्या त्रुटियाँ हैं, कौन सी चीज आपको अन्य लोगों से भिन्न बना रही है और आपको कौन सी चीज उन्नत करेगी, क्योंकि सदाशिव का स्थान आपके सिर, विचारों, मस्तिष्क और भावनाओं से ऊपर है। यह सीमा अब आपको पार करनी होगी।

जब आप किसी भी चीज के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, कोई भी चीज जब आपके लिए महत्वपूर्ण न रह जाएगी तभी भगवान शिव कार्य करेंगे। तो कुछ चीजें अब भारतीयों ने सीखनी हैं और कुछ विदेशी सहजयोगियों ने। आपने बहुत से कार्य किए हैं, मैं आपको धन्यवाद करती हूँ। लोग सोचा करते थे कि मैं कुछ नहीं कर सकती। आप लोगों ने मद्यपान और सभी प्रकार की बुरी आदतें छोड़ दी हैं। अब आप व्यभिचारी भी नहीं हैं। आपका चित्त अत्यन्त पवित्र है। आपने बहुत से प्रशंसनीय कार्य किए हैं। परन्तु अभी भी बहुत से दोष बने हुए हैं जिन्हें स्वच्छ करना और बिल्कुल समाप्त कर देना आवश्यक है।

आपमें राजनीति अधिक नहीं है फिर भी कभी कभी राजनीति होती है। झुण्ड भी बनाए जाते हैं। ये सब चीजें समाप्त हो जानी चाहिए क्योंकि शिव का इनसे क्या लेना-देना। पूरा ब्रह्माण्ड उनके चरणों में है। एक झुण्ड यहाँ, एक वहाँ। इसका शिव की दृष्टि में क्या महत्व है? यह तो उनके मस्तिष्क में ही नहीं आ सकता। महान व्यक्ति विशाल सागर की तरह बहुत से किनारों को छूकर भी महान सागर सम बना रहता है। शिव तत्व भी ऐसा ही है। आप सबको चाहिए कि शिव तत्व को विकसित करें और तब आनन्द को देखें-प्रेम को इस महान सागर के आनन्द को !

परमात्मा आपको धन्य करें।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

It is a very long lecture I have given in Hindi language; and because there are very few, also, Sahaja Yogis from abroad. What I was telling them was that about the Principle of Shiva is in your heart, and that reflection is not on a chakra, but on a... like a mirror. Now, whatever is visible of you is this mirror. In this mirror, what reflection you have? Do you have a reflection, which is clear, clean? Have you cleaned your heart, have you cleaned your mirror that is reflecting? That is what one has to see.

Now, what I told them at length was this, that how there are six enemies we have got. And all these six enemies, one after another, try to corrupt us. Out of that, I have told them about five. The sixth one doesn't exist much in India, which we call as lust, is much less. But, for foreign countries one has to know that it is one of the major things that they have in the West, because they think lustful life is the only life worth living. Beyond that, is Shiva. And that's why we have to understand that in our heart, the reflection of Shiva is only possible in complete form when we have cleaned our heart. To have malice for others, to have lust for others, to have anger for others, to have envy for others, all these reactions within us act and our heart becomes like a stone, it cannot reflect. So, if you have to reflect the quality of Shiva, which is very important today, in this Kali Yuga; very... there are very few people who are really reflecting the image of Shiva in their own character. So, it is important to watch yourself and see for yourself - what's wrong with you? Where am I... where is my attention going? Where am I going? What am I doing? - If you go on judging yourself and not others.

Also, in... one of the western things is that they think they have a right to criticize others, everybody. "I like it, I don't like it". Who are you? Why do you say such a thing? Somebody had made a beautiful, say, arrangement for you; you sit in his house and nicely say, "I don't like it," to hurt that person. After all, who are you? What do you think of yourself? Who are you to judge? For Sahaja Yoga... Yogis, is prohibited to say, "I like" and "I don't like." Is prohibited. Look at Shiva. He likes everything. What He wears? Also snakes. He likes all kinds of animals. Every type of thing that we think is not good, ugly, for Him they are not. For example, in His wedding He took with Him, in His "Barat", people who were all infirm. Some people had one leg; some people had limbs broken down. Some had only one eye. All such people He carried with them. To Him, these people were very dear and He looked after them, because He is the source of joy. He is the One who gives us joy. And the One that makes us joyous. The real joy is only possible if, in your heart, His reflection is there. But if your heart is full of all things, that once I have described, it becomes a dirty, very, very dirty mirror.

Very surprising, I told them also, that compared to Indians, Westerners are not so particular... Western Sahaja Yogis are not so particular about their comfort. Though they come from a very materialistic surrounding, they are not so much bothered. They can live anywhere, they can be happy anywhere. That's a very good stage they have reached and that's what's... the Indians must try to follow and don't pay attention to nonsensical things. It is not necessary to waste your energy on nonsensical thing. Then only you can have a real Bhakti for your Self, for your Atma and that is what needed today, that your Spirit should shine in your character, in your behavior and in your personality. If that happens, then you have achieved what Sahaja Yoga wanted to do for you. Is important today, very important. If you read the newspapers, you can't read it. And what you need is to change; the transformation; as we in Hindi call it 'pariwartan', of human beings into Selfhood, into Self-awareness, into the Spirit. This has to be done. And the time has come; this evolutionary process has started. There are so many of them who have got it.

Now the old saints and people who were gurus, real gurus, they used to really test the disciples by

making them stand on their heads for years together, sometimes put them in the water, do all kinds of things. They used to beat them and they were very harsh - testing all of them. And then only, one of them used to get realization. Now, what I thought of – it takes too much time to cleanse them, to put them into all kinds of dresses, this, that, send them to Himalayas or to Gobi Desert. I thought it will take too much time. I said why not first enlighten them? Give them the light. In that light they can see their problems and they will themselves correct themselves. They will be their own guru. And it was successful. It was good.

Now you can see for yourself what you are doing, what is your problem, what makes you so much different from others and what will elevate you. Because Sadashiva's place is above the head, above your thoughts, above your mind, above your emotions. It's here, and you have to cross this limit. Only when you do not react to things, and also to you nothing is important than Shiva, then only it will work out.

So, in some things Indians have to learn, and in some things you foreigners have to learn. So many things you have done, I must thank you very much. People used to think that I cannot do anything. I mean, you have given up drinking, you have given up all kinds of bad habits, you are no more womanizers, your attention is so clean, so many things you have done, which is really praiseworthy. But still, you must learn that still there are certain things lingering, which must be cleared out and must be absolutely finished. You don't have very much politics, but sometimes there is also politics... group forming is there. All this has to go away, because for Shiva, what is this? The whole universe is at His feet. To Him to have a one group here and a one group there, all that doesn't matter. To Him, it doesn't come into His head, you see. For a person like a very big ocean, it touches many shores. But in itself it is a big ocean. In the same way is Shiva principle, and you all should develop that principle of Shiva. And then see the joy, the joy of this great ocean of love.

May God bless you.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi & English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

आज आपण श्री महादेव श्रीशंकरजींची पूजा करण्यासाठी एकत्र आलो आहोत. श्री शंकराच्या नावाने सृष्टीमध्ये अनेक प्रकारची व्यवस्था आहे. आदि शंकराचार्यांच्या प्रभावामुळे शंकराची पूजा मोठ्या प्रमाणावर होऊ लागली. दक्षिण भारतात दोन प्रकारचे पंथ आहेत, एक वैष्णव लोकांचा श्री विष्णूला मानणाऱ्यांचा तर दुसरा श्री शिवांना मानणाऱ्यांचा. आपल्या देशातील लोक विभाजन करण्यामध्ये फार हुशार आहेत, ईश्वराचेही जणू विभाजन करण्याचा प्रकारच म्हणा, आणि त्याचे एकत्रीकरण करायला गेले तर वेगळेय पण विपरीत रूप बनते. अप्याप्या ह्या देवतेचा हाच प्रकार लोकांनी केला. त्यात सांगतात की विष्णूने जेव्हा मोहिनीरूप धारण केले तेव्हा शिव त्याच्या पोटी जन्माला आले. ही फार चुकीची गोष्ट आहे. आपल्या देशात अशा अनेक चुकीच्या गोष्टी सुरु होतात व त्यातून वेगवेगळे पंथ निर्माण होतात. आपल्या लोकांना कसल्या ना कसल्या नावाखाली झगडे करण्याचा नादच आहे आणि त्यासाठी काही निमित्त मिळाले नाही तर काहीतरी काल्पनिक कथा तयार करून त्यांच्यासाठी झगडे करतील. या दोन्ही गोष्टी चुकीच्या आहेत. सूरज आणि सूर्यापासूनचे किरण, शब्द आणि अर्थ व चाल आणि चालना; तसे दे दोन्ही एकच आहेत. म्हणजे जो सोपान मार्ग - सुषुम्ना नाडीचा मध्य मार्ग. हाच श्री विष्णूचा मार्ग आहे व त्या मार्गावरून आपण शिवतत्त्वापर्यंत पोचू शकतो. म्हणजे मंडिल श्री शिव तर मार्ग श्री विष्णू. हा मार्ग तयार करण्यासाठी श्री विष्णू व श्री. आदिशक्ती यांनी फार मेहनत केली आहे. त्यामध्ये श्री. शिवाचे काही कार्य नाही, ते आपले आरामात बसले आहेत, ज्याला यायचे असेल तो येईल ज्याला यायचे नसेल तो येणार नाही. म्हणून श्री शिवाच्या पायाशी पोगण्याचा श्री. विष्णूचा मार्ग आपण पत्करला पाहिजे आणि त्या मार्गावरची चक्रे आपण ठीक केली पाहिजेत. ते झाले तरच आपण श्री. शिवापर्यंत पोचू शकू. चक्रे ठीक झाली की हा श्री विष्णूमार्ग उघडतो व त्यातूनच आपले हळूहळू उत्थान घडत जाते. या चक्रांबद्दल मी खूप काही सांगितले आहे, त्यातलेच एक आपले हृदय ज्याला डावे हृदय चक्र म्हणतात. खरे तर हे चक्र नसून श्री महादेवाचे प्रतिबिंब आहे. शिवाचे स्थान मस्तकाच्या वर म्हणजे विचार, बुद्धि यांच्या पलीकडे आहे, म्हणून त्या स्थानापर्यंत पोचण्यासाठी प्रथम आपले हृदय किती स्वच्छ आहे हे आपण बघितले पाहिजे. आपल्या हृदयात अनेक प्रकारच्या दोषांची घाण असते. उदा. ईर्ष्या, तुम्हाला कोणी त्रास दिला असेल, तुमचे नुकसान केले असेल तर त्याच्या बद्दल ईर्ष्या बाळगून काही उपयोग नाही. तुमचे हृदय जर स्वच्छ

असेल तर तुमच्यामधील आरसा स्वच्छ राहील व परमात्म्याचे प्रतिबिंब त्यामध्ये येऊ शकेल. पण ईर्ष्या असली तर हा आरसा प्रतिबिंबित करू शकणार नाही. म्हणून कुणाबद्दलही राग किंवा आक्रान्ता बाळगणे ही खराब गोष्ट आहे, म्हणूनच येशू ख्रिस्तानी सर्वांना क्षमा करा असे सांगितले, तीच गोष्ट अनेक साधू-संतही सांगित आले. जसे तुम्ही क्षमा करत जाल तसे त्या गोष्टी महादेव आपल्या नियंत्रणाखाली घेतात आणि त्यांची शमित अति-सूक्ष्म असल्यामुळे ते या गोष्टीचा निफाल लावतात व त्यासाठी शिक्षा देतात. हे महादेवाचे कार्य असते, तुमचे नाही. मी पाहते की सहजयोगामध्ये आल्यावरही ही ईर्ष्या सुटत नाही, कुणाला ट्रस्टी नेमले तर इतरांना त्याच्याबद्दल ईर्ष्या वाढू लागते, या ट्रस्टी वा लिडरमध्ये खरं तर काही अर्थ नसतो. माताजींनी हा एक खेळ चालवलेला असतो. पण तरीही ह्या प्रकारांनी लोकांची डोकी खराब होतात, मलाच त्यासाठी काय करावे कळत नाही. हे कार्य जगभर इतके पसरले आहे की संपर्क ठेवण्यासाठी कुणाला तरी असे नेमण्याची माझी गरज आहे म्हणून हे करते. तसे पाहिले तर या बाबतीमध्ये यरीच सुधारणा झाली आहे तरी पण अजूनही कोण लीडर झाला वगैरे चर्चा चालतेच.

दुसरी एक गोष्ट म्हणजे, विशेषतः भारतीयामध्ये ही ईर्ष्या पैशाच्या बाबतीत फारच प्रबळ होते, सहजयोगामध्येही पैशाच्या बाबतीत ही प्रवृत्ति बरीच आहे; कुणाकडे पैसा जास्त आहे, कोण गरीब आहे, सहजयोगाच्या कार्यामधून कोण किती पैसे कमावतो ह्या गप्पा व चर्चा अजूनही चालतात, ज्याचे हृदय पैशामध्ये गुंतले आहे तो सहजयोगाच्या कार्यासाठी काही कामाचा नाही. अशा हृदयात जडवाद, भौतिक लालसा टिकून आहे असे समजा. जड आणि भौतिक गोष्टीमध्ये तुमचे अंतःकरण अडकलेले असेल तर तुमचा उद्धार होणे अवघड आहे, आपल्या देशाची हीच विशेषता आहे. परदेशांत ह्या गोष्टीकडे कुणी फारसे लक्ष देत नाही, तसे पाहिले तर रशियासारख्या पौरात्य भागांमध्ये पैसा खूप कमी आहे पण तरीही लोक त्याची चिंता बाळगत नाहीत. आपण लोक स्नान करून, हात-पाय धुऊन देवाची आरती-प्रार्थना करतो त्यापेक्षा हृदयाला स्नान घालून व स्वच्छ करून प्रार्थना केली तर जास्त बरे होईल.

आपल्याकडे जे षड्रिपु आहेत त्यामध्ये राग, क्रोध हा फार वाईट शत्रु आहे. एकदा का माणसाला क्रोध अनावर झाला की संमोहाचा पगडा येतो व त्याला वाईट वाटू लागते आणि आपण का रागावतो आपल्याला राग का आवरता येत नाही इ. विचारांनी तो

यासतो. पण क्रोध आला की माणूस स्वतःला विसरतो आणि तोंडाला येईल ते बडबडत राहतो, त्याच्या हृदयात साचलेली घाण अशा वेळी त्याच्या तोंडातून बाहेर पडते. हा राग आवरला पाहिजे, त्यासाठी आपण का रागावतो इकडे चित लावावे. काही लोकांचा क्रोध व्यक्तित्वात असतो तर काही वेळा तो समाजसापेक्ष असतो. म्हणून क्रोध का येतो हे विचारात घेतलेले चांगले. लोक कधी कधी मला म्हणतात "माताजी, तुमच्याविरुद्ध कुणी काही बोलले तर आम्हाला राग येतो." मला तर याचे हसूच येते. मग मी गंमतीने सांगते "मी तर प्रेम करायला व्यक्त असते, म्हणून अशा गोष्टी सोडून घ्या." उलट ज्याच्यामुळे राग होतो त्याच्याबद्दल त्या बाळगायला शिकावे, क्रोधित होणाऱ्या माणसाने अत्यंत शालीन व्हायचा प्रयत्न करावा. सामाजिक स्तरावरही आपल्याकडे अशा काही संस्था आहेत ज्या या क्रोधांमधूनच ह्णामारी, मारपीट असले प्रकार करत असतात. काही वेळा तर मारपीट करणाऱ्यांची सेना तयार होते. ही फार गंभीर व भयानक गोष्ट आहे. आता या गोष्टी आपल्या संरक्षणासाठी कुणी करत असेल तर ते समजण्यासारखे असेल. पण जो माणूस परमात्म्याचा भक्त आहे त्याला कसल्याच संरक्षणाची जरूरी नाही कारण त्याच्यामधे श्री महादेव वास करून राहिलेले असतात. अशा माणसाला कोण काय करू शकणार ? त्याला कितीही त्रास दिला, छळले तरी कुणीही त्याला नष्ट करू शकणार नाही, आपल्याला कुणीही नष्ट करू शकत नाही असा त्याचा ठाम विश्वास असतो, उलट त्याला त्रास देणाऱ्याचाच नाश होत असतो. ही सद्भा जेव्हा तुमच्या हृदयात निर्माण होते तेव्हा तुमचे हृदय पूर्णपणे स्वच्छ झालेले असते. श्री शिवाचे स्थान आपल्या हृदयात प्रतिबिंब स्वरूप आहे व आरसा जेव्हा साफ असतो तेव्हाच त्याच्यातील प्रतिबिंब स्वच्छ स्पष्ट असते. शिवाचा क्रोध एक वेळेसच होतो असं म्हणतात पण मी त्याचा क्रोध खूप वेळा बघितला आहे किंबहुना तो त्याचा अधिकारच आहे. आदिशक्तीच्या विरोधात कार्य करणाऱ्यांपर्यंत ते कुठेही असले तरी शिवाचे हात तेथपर्यंत जाऊ शकतात. मग ते कुणाचेही ऐकत नाहीत. त्यांना माहीत असते की आदिशक्ती स्वतःहून आपल्या विरोधी लोकांना दंड वा शिक्षा करणार नाहीत. उलट क्षमाच करतील, पण त्यांचा हात इतका लांब आहे की तो कुठेही पोहोचू शकतो व त्याला कुणीही अडवू शकत नाही! त्यांना कोण रोखणार ?

यावरून तुमच्या लक्षात आले असेल की सहजयोगी म्हणून तुमच्या वैयक्तिक जीवनातही शिवाचेच अनुकरण तुम्ही केले पाहिजे असे केल्याने अनेक फायदे होतात. एक म्हणजे तुम्हाला हृदयाचे त्रास कधी होणार नाहीत. हृदयाचे विकार क्रोध बाळावल्यामुळे होतात. क्रोधापासून पश्चाताप वाटू लागला की अंजायनाचा त्रास होतो. नुसते म्हणून वा बोलून क्रोध कमी होऊ शकत नाही. म्हणून मला वाटते की आरशासमोर उभे राहून स्वतःवरच रागावायची सवय केली, माझ्यासारखा महामूर्ख कोणी

नाही असे स्वतःलाच म्हणायची सवय केली तर कदाचित क्रोध कमी होऊ शकेल. तसे क्रोधाची समस्या इतकी कठीण आहे की ती सोडवणे फार कठीण असते. काहीही समोर आले की लगेच त्यावर प्रतिक्रिया करणे ही आणखी एक समस्या, जास्त करून परकीय लोकांमध्ये, बरीच आहे. "मला हे आवडत नाही." असे सारखे म्हणायचा हा त्याचाच प्रकार, असे म्हणणारे तुम्ही कोण ? पण आजकाल ही एक फॅशनच बनून गेली आहे. खरे तर हे बोलण्याची जरूरीच नसते. हा आज्ञाचा दोष आहे. कुणी तुम्हाला फुले दिली आणि तुम्ही म्हणालात मला फुले आवडत नाहीत तर ती देणाऱ्याची भावना तुम्ही दुखावता व त्याचा अन्याय करता, त्याच्यामागचे प्रेम तुमच्या लक्षात येत नाही. सुदाम्याने पुरुषुडी करून आणलेले साचे पोहे श्रीकृष्णानी कसे आवडीने खाल्ले तुम्हाला माहीत आहे. कुणी एखादा गरीब माणूसही एखादी वस्तू मोठ्या प्रेम भावनेने तुम्हाला देतो त्याचा आदर करावा. हे कावेला मागच्या बाजूने पारा लावण्यासारखे आहे. त्यानंतरच त्याचा आरसा होतो व प्रतिबिंब त्यात येते. अशी भावना बाळगली की तुमच्यात कलात्मकताही निर्माण होते. ही कलात्मकता प्रेमाची आहे व त्यातून दिल्या गेलेल्या वस्तूमधील कला तुम्हाला जाणवते व तो देणारा मनुष्य किती प्रेमळ, मनमोकळा, उदार व सज्जन आहे हे तुम्ही लक्षात घेता. असे केले की तुमची नजर आपोआप स्वतःकडे वळते. माझ्यामधे हे प्रेम आहे का हे तुम्ही बघू लागता, आपण वरवरचेच प्रेम दर्शवत तर नाही ना हे तुमच्या लक्षात येऊ लागते. आपणच अनेक धुका करत राहिलो, आपल्यातला कमीपणा लक्षात घेतला नाही आपल्यामधेच जर काही चुकीच्या धारणा असतील तर आपण कुणालाच सुखी करू शकणार नाही. हा स्वार्थीपणा म्हणायचा. 'स्वार्थ' हा फार सुंदर शब्द आहे, स्व म्हणजे आत्मा व आत्म्याचा अर्थ म्हणजे स्वार्थ. स्वार्थ बाळगणारे बरेच लोक शिवांची पूजा करत असतात हे मी पाहतो, शिवाय हे लोक फार कंजूस व क्रोधी पण असतात, पण शिवासारखा दाता दुसरा कोणी नाही, ते प्रेमाचा स्रोतच आहेत, तो स्रोतच सगळीकडे वहात आहे आणि त्याच्यामुळेच हे सर्व कार्य चालले आहे. शिवचरणाचीच ही लिला आहे व त्यातच जगभर सहजयोग पसरत चालला आहे व त्या सागरात तुम्ही न्हाऊन गेले आहात. यानंतर तुमचे चित्त श्री शिवाच्या चरणी लीन होऊन जाते व त्यामुळे तुमच्यामधील पंचतत्वांचे गुण सूक्ष्म होतात. याआधी मी चार तत्वांबद्दल बोलले होते पण पाचवे तत्त्व, ज्याला 'आकाश' म्हणतात (Ether) त्याबद्दल जास्त बोलले नव्हते. मानव सूक्ष्मस्थितीला आल्यावर हे सूक्ष्मतत्त्वही जाणतो. आकाशतत्त्वाकडूनच ईश्वर प्रवाही होते, त्याचप्रमाणे हे आकाशतत्त्वही चलायमान व्हायला हवे, हे आकाशतत्त्व सगळीकडे व्यापून असल्यामुळे जिथे-जिथे काही अडथळा वा समस्या असेल तिथे-तिथे या आकाशतत्त्वामधून तुमचे चित्त पोहोचू शकते व ज्याची जरूर आहे ते कार्य घटित होते. हे प्रत्यक्षात घडत असते, असे

झाले की लोक त्याला चमत्कार समजतात पण खरे तर ही चमत्काराची गोष्ट नाही तर सूक्ष्मतेच्या कार्य आहे. तुमचे चित शिवाच्या चरणी अशा जागृत स्थितीला आल्यावर तुमच्यामध्ये जे सूक्ष्मातिसूक्ष्म असे जे भाव असतात किंवा जी स्थिती असते ती जागृत होते.

हे मिळवण्यासाठी आपले हृदय पूर्णपणे साफ व्हायला हवे. मी मानवामधील तीन रिपूबद्दल वर सांगितले, चौथा रिपू जो आहे तो म्हणजे 'मद' म्हणजे घमंड. महिलांना घमंड झाली की त्या पुरुषांसारखे चालायला-वाग्याला लागतात. मग ही घमंड पैसा, रूप व शिक्षण कशामुळेही आली की स्त्री पुरुषासारखी बनत जाते. उलट पुरुषांमध्ये अशी घमंड आली की ती स्त्रीसारखा वागू लागतो. आरशासमोर जास्त असणे, प्रसाधन, कपडे यात मग्न असणे इ. मध्ये रमतो, त्याच्या चालण्या-बोलण्याची दबही लटकल-मुरडत अशी स्त्रीसारखी होते. इतकी की पाहणाऱ्याला



मुंबईतील पब्लिक प्रॉमोमध्यावेळी श्री माताजी स्टेजवरती येताना

वाटावे की पुरुषी कपड्यांतील ही एक स्त्रीच आहे. कधी कधी मदमस्त होऊन हत्तीसारखे डोलायलाही लागतात. अशा तऱ्हेने बसण्या-उठण्यात, बोलण्या-चालण्यात ही घमंड दिसून येते. सहजमध्ये या गोष्टींना काही अर्थ नाही. स्वतःला कुणी विशेष आहेत असे समजण्यात काही अर्थ नाही. कारण अशी समजूत (घमंड) वाटली तर तुम्ही विशेषचे फक्त शेष रहाल, म्हणून स्वतःबद्दल कसलीही घमंड बाळगू नका. तुम्ही परमात्म्याला मानणारे, ईश्वरभक्त व साक्षात्कारी योगी आहात हे लक्षात घ्या. नाहीतर आनंदाला तुम्ही मुकाल. शिवशक्तीमध्ये आनंद आनंदच आहे. माणूस आनंदाच्या अनुभवामध्येच मस्त होण्यासाठी शिवशक्ति असते, पण मी पाहत की बरेचसे शिवभक्त म्हणवणारे लोक आनंदी नसतात. त्यांच्याशी नुसते बोलणेही कठिण असते. याचा फायदा काय? शिव भक्ति करतात तेव्हा. साक्षात नटराज असतात. आनंदाचे मूर्तिमत कलात्मक रूपच. पण हे शिवभक्त म्हणजे रुद्राक्षाच्या नुसत्या माळां घालणारे! त्यानेच त्यांना हृदयाचा अटक येणार असतो. त्यातून शिवभक्त मस्माचे कपाळावर आडवेच पडे फासणार तर विष्णुभक्त उभे पडे फासणार. खरे तर आडवा म्हणजे खूप शक्तिवान तर उभा म्हणजे ऊर्ध्वगामी, म्हणून दोन्ही पडे लावणे बरे! म्हणून लक्षात घेतले पाहिजे की ज्या शिवलक्षासाठी आपण चालतो-तो सोपानमार्गच हवा. त्या मार्गामध्ये एक-एक वाईट गोष्टी सोडत चालायचे आहे, दुसऱ्याचे चांगले वाईट बघण्याआधी आपल्यातील चांगल्या-वाईट गोष्टीकडे लक्ष द्यायचे आहे. सदातः "मी कसा आहे?" हे पहात बसलात की सर्व भुते पळून जातील. एरवी हीच सारी भुते आपल्याच आज्ञा बघावर जिमा होतील आणि असा माणूस दुःखदायी बनतो. दुसऱ्याला दुःख देणारा माणूस कधीच सुखी होऊ शकणार नाही. उलट तो स्वतःच आतमध्ये दुःखी होईल.

तुम्हाला शांति, सुख, आनंद व प्रेम मिळावा ही एकच आईची भावना असते. पण शिवाची गोष्टी वेगळी, ते बिघडले की झुरी घरणेक देतात की मलाही भीति वाटू लागते. तसेच ते भक्तांना अज्ञानातून कोलेल्या चुकांची क्षमा करणारे आहेत आणि त्यांची तपस्या करणाऱ्यांना वरदान देणारे आहेत. पण ज्या माणसाला मुळातच सत्यज्ञपणाची आवड नाही त्याला ते टीक करतात. म्हणून त्यांना 'भयंकर' असे म्हणतात. म्हणजे एकदा बिघडले की कुणाचेही ऐकत नाहीत. पण हे सर्वस्वाचा अंत होण्याच्या वेळी होणार. यालाच मी लास्ट जजमेंट या शब्दात सांगित आले आहे. तुम्ही काय करत आहात, कुठल्या वाटेने चालला आहात हे सर्व तुमच्यामध्ये रेकॉर्ड होत असते. त्यानुसारच तुम्ही स्वर्गात किंवा नरकात जाता. तुम्हाला नरकात पाठवण्याचे काम मी नाही तर शिव करणारे आहे. काही लोकांना वाटते मी आपण माताजींना इतके मानतो, त्यांच्यासाठी इतके करतो तरी आपल्याला शिक्षा का मिळते? त्याला कारण मी नाही. पण शिवाची मर्यादा मी आहे तरी माझी मर्यादा तेच आहेत. म्हणून भक्तीमध्ये

दोघांचा स्वभाव अगदी वेग-वेगळा असल्यामुळे तुम्हाला रूप काळजीपूर्वक राहिले पाहिजे. मी हे एवढ्यासाठी सांगित आहे की सहजयोग्यांसाठी काही खराब व पैशाच्या मागे लागलेले लोक आहेत. दुसऱ्यांचे नुकसान करणारेही आहेत. हे सर्व लोक बाहेर फेकले जातील पण जाता-जाता श्री शिवाच्यासमोर येतील. मला कोणी Bankrupt झाल्याचे सांगितले तरी मी त्याबद्दल काही ऐकून घेत नाही. **जे आपण हूनच संरक्षण-कवचापासून बाहेर जातात त्यांना कोण वाचवणार?** म्हणून प्रत्येकाने आपले संरक्षण शिवाकडूनही मिळवले पाहिजे. मातेचे संरक्षण आहेच पण शिवाकडूनही ते घेतले पाहिजे. म्हणून मी ज्या पाच तत्वाबद्दल सांगितले ते सूक्ष्मतेतून तुम्ही मिळवायला हवे. आणि त्यासाठी ध्यान तुम्हाला केलेच पाहिजे. ध्यान करणारे व न करणारे सहजपणे ओळखून येतात. ध्यान मनापासून झाले नाही, त्यामध्ये मन स्थिरावले नाहीतर त्या ध्यानाचा लाभ मिळत नाही. त्याचा काही फायदा नाही. **ध्यान असे पाहिजे की रोमारोमांतून आनंद उमटला पाहिजे. श्री शिव तुम्हाला अशा आनंदाने पुलकित करतात.** त्यांच्या नुसत्या नामस्मरणातूनही आनंद वाटला पाहिजे. काही लोकांच्या बाबतीत हे होत नाही याचे मला आश्चर्य वाटते. शिवभक्त लोक शुष्क, दुःखी असू शकतच नाही.

या बाबतीत एक गोष्ट अशी की जे लोक अती कार्यमान कार्याच्या पाठीमागे लागलेले असतात ते उजव्या बाजूचे होत राहतात. हे प्रमाणाबाहेर गेले की ते शिवापासून विभक्त होतात. आणि मग त्याचे परिणाम दिसू लागतात. सरस्वतीदेवी ही शिवाची बहीण- जे लोक बरीच ज्ञानसाधना वा कलोपासना करतात त्यांनी ही गोष्ट नहमी लक्षात ठेवली पाहिजे. म्हणून ज्ञान व कला याबाबतीत जे चुकीच्या गोष्टी करतात- चुकीच्या कल्पना मांडणे, विपरीत ज्ञान पसरवणे. अश्लील कला जोपासणे- आणि सरस्वतीचा अपमान करतात ते एक फार मोठा गुन्हा करत असतात आणि शिव त्यांना मोठी शिक्षा करतात. आदिशक्तीच्या बाबतीतही त्यांचे असेच कडक नियम आहेत. यांत मुळीच शंका नाही. म्हणून सहजयोग्यांनी स्वतःकडे लक्ष द्या फार जरूरीचे आहे. 'माझ्यात काय कमी आहे. मी कोणत्या चुका करतो' इकडे सतत ध्यानपूर्वक लक्ष दिले पाहिजे.

आपल्या भारतीय संस्कृतीमध्ये याचा अगदी सोपा मार्ग दाखवून दिला आहे. आजकाल नया जमाना आला आहे म्हणजे काहीही केले तरी चालते हा विचार मूळ धरत आहे. पण ते बरोबर नाही. **भारतात रहायचे असेल तर भारतीय संस्कृतीचे पूर्णपणे अनुसरण केलेच पाहिजे.** सारी जीवनप्रणालीच कशी असावी याचे भारतीय संस्कृतीमधून विवरण केले आहे. या संस्कृतीमध्ये तीन मुख्य तत्त्वे आहेत. सर्वप्रथम शिवतत्त्व, आपल्या संस्कृतीमधील सर्व मर्यादा शिवतत्त्वामध्ये आहेत. लहान-सहान गोष्टींपासून मोठ्या गोष्टीबद्दल सर्व मर्यादा शिवतत्त्वामध्ये आहेत व त्याच्याकडे शिवाचे फार लक्ष असते, त्याचे उल्लंघन केलेले त्यांना चालत

नाही. या शिवतत्त्वाबद्दल लोकांमध्ये काही चुकीच्या धारणा आल्या आहेत. उदा. मांग प्यायली की शिव-तत्त्व प्राप्त होते. तीव्र समजूत दारु पिण्याबद्दल. अशा अनेक गोष्टी शिवतत्त्वाच्या नावाखाली लोकांनी पसरवल्या. शिव विष प्यायले तसे तुम्ही पिऊ शकाल का? संसारातील सर्व विष संपवण्यासाठी त्यांनी ते प्राशन केले. म्हणूनच ते धोत्र्याची फुले खात असत. कारण त्याने विषाचा प्रभाव नष्ट होतो. तसेच साईनाथ लोकांची तंबाखूची सवय जावी म्हणून घिलीम ओढायचे. मंत्री लोकही तंबाखू खातात, शिपायाकडूनही वेळ पडली तर मागतात. महाराष्ट्रात तंबाखू पेरत नाही पण खाण्याची सवय फार आहे. म्हणून साईनाथांना ती संपवून टाकायची होती. पण लोक उलटे त्यांचे आचरण करण्यासाठी तंबाखू खाण्यात चूक मानत नाहीत. शिवांचा तंबाखूची काही संबंध नाही. तरी ती सवय शिवतत्त्वाच्या विरोधात आहे. तसेच देवीचे कार्य जगातील दुष्टांचा व भुतांचा संहार करणे. ते तुमचे कार्य नाही. याच दृष्टीने जे अनेक साधु-संतानी केले ते तुम्ही करू शकणार नाही. तशी शक्ति तुमच्याजवळ नाही आणि ते तुमचे कार्यही नाही. **तुमचे कार्य आहे की स्वतःला ठीक करणे, स्वच्छ करणे आणि शिवतत्त्वाच्या स्थितीला येणे.** तशी स्थिती मिळवली नाही तर सर्व मेहनत वेकार जाईल. **चुकीच्या गोष्टींचे अनेक तऱ्हेने समर्थन करणे शक्य असले तरी तुम्हाला योग्य त्या मार्गानेच जायचे आहे. योग्य प्रकारेच वागायचे आहे. म्हणून सर्वप्रथम आपण आपले हृदय स्वच्छ केले पाहिजे.** आपल्या ज्या काही वाईट सवयी आहेत त्यांचा हृदयावर फार परिणाम होत असतो. एक जमाना असा होता की जे विद्यार्थी येतील त्यांना जंगलात रहावे लागायचे. म्हणजे ऐषआरामाची सवय मोडून टाकली जायची, फार तर झोपडीमध्ये जमिनीवर (शेणाने सारवलेल्या) झोपायला मिळे. अंगावर फार कमी कपडे असत. कारण कपड्यांची लालसा वाढू नये म्हणून. तुमची आई कुठेही राहू शकेल, कुठेही झोपू शकते, काहीही खाऊ शकते हे तुम्हाला माहित आहेत. आणखी एक गोष्ट म्हणजे भारतीय लोकांना खाण्याचे चोचले फार असतात. महिलांना तर फारच. मला पण जेवणासाठी सारखा आग्रह करतात. पण मी बाहेरचे किवा हॉटेलचे जेवण घेत नाही. घरचेच जेवण, तेही मीठ-साखर नसलेले मला लागते. भारतीय महिला, पंजाबी, गुजराथी इ. सगळ्या प्रांतातल्या महिला खाना बनवण्यात फार चतुर. नवऱ्यांनाही त्या खायला घालून बुडू बनवून ठेवतात! माझ्या नवऱ्याला हे आवडते ही भाषा सगळीकडे ऐकायला मिळते. दिवसभर त्या खाण्या-पिण्याच्याच गोष्टी करत बसल्या तर त्यांना सहजयोगी कसे म्हणणार? एकूण खाण्यापिण्यामध्ये हिंदुस्तानी लोक फारच उत्साही. त्यांची अशीच एक दुसरी सवय म्हणजे परदेशात पूजेसाठी आले तरी त्यांनी अटॅन्ड बाथरूम हवी असते, आपल्या घरी कधी त्यांना त्याची गरज वाटत नसली तरी तिथे रहायच्या जागी आधुनिक व्यवस्था असलेली attached

bathroom हवी असते. गणपती पुढ्यातही तीच तऱ्हा. परदेशी सहजयोग्यांसाठी त्यांना सवय नसते म्हणून वेगळ्या बाथरूम बांधण्यात येतात. पण ह्या लोकांनाही त्यांच्यासारखी वेगळी व्यवस्था लागते! मग ते परकीय लोकच म्हणू लागले की आम्हाला हिंदुस्तानी पद्धत चालेल. म्हणून त्यांची अदलाबदल केल्यावर हे भारतीय लोक एकदाचे खूब झाले. सहजयोग्यांनी अशा गोष्टी करणे एक शरमेची गोष्ट आहे. आणखी एक हैराण करणारी गोष्टी म्हणजे कब्र्यात पूजेसाठी येणारे इतर परकीय लोक वेगवेगळ्या जातीचे असले तरी आनंदाने जसे असले तसे एकत्र राहतात पण भारतीय लोक हॉटेलमध्ये जाऊन राहतात. या सर्वामधून त्याम करण्याच्या भावनेचा अभाव दिसून येतो. अजकालच्या मॉडर्न पद्धतीमध्ये त्याम ही भावनाच लुप्त होत असल्यासारखे दिसते. या लोकांकडे नोकर-चाकर नाहीत. सर्व कामे आपली आपल्यालाच करावी लागतात. फालतू गोष्टींकडे वित्त लागणे, बेकार गोष्टींच्या मागे लागणे या सवयी तुम्हाला फक्त एक साधारण सर्वसामान्य माणूस बनवतात. आजकालच्या बायका ब्युटिपार्लरच्या मागे लागतात. पुण्यासारख्या गावात ब्राह्मण महिलाही स्लीवलेस ब्लाऊज घालतील, काळा चप्पा लावतील आणि स्कूटर वा कारमध्ये भटकतील. पुण्यासारख्या पुण्यभूमीची ही तऱ्हा! मला हे समजतच नाही. शिवांकडे पहा, ते आरामात बसलेले असतात. बराती म्हणून गेले तर नंदीवर बसून, नंदी त्यांचा फार आवडता. कारण ते म्हणतील त्याला मान डोलवणारा! पार्वतीला त्याबद्दल काही विरोध नव्हता पण तिच्या भावाला हे एक आश्चर्यच वाटले.

मला तुम्ही असेच रहा असे म्हणायचे नाही पण नको त्या गोष्टींच्या मागे लागण्यात, त्यावर पैसे उधळण्यात काय अर्थ? 'समजदारी' असावी, जे आहे त्यात रहायला शिकावे, खाना जसा आहे, जसा मिळेल तसा मान्य करावा, कुठे जेवायला गेले तर तिथल्या जेवणाला नावे ठेवणे किंवा घरात काही केलें तर ते अमक्या-तमक्या घरातल्यासारखे नाही बनले अशी टीका करणे. अशा तऱ्हेने खाण्यामध्ये जिमेचे घेवले पुरवणे हा प्रकार हिंदुस्तानी लोकामध्ये फार जास्त चालतो. हे प्रकार थांबायला हवेत. हे परदेशी लोक तुमचे जेवण घेतात पण त्यांनी कशाला नावे ठेवल्याचे माझ्या कानावर येत नाही. आता त्यांच्याकडचा इंग्रजी खाना तुम्ही घेऊच शकणार नाही ही गोष्ट वेगळी. पण असल्या सवयीमुळे जीवनातील आनंदाला तुम्ही पारखे होता. पूर्वीच्या काळी पार होण्यासाठी हिमालयात जावे लागायचे. जंगलात राहून नंदीवर आंगोळ करावी लागायची. जमिनीवर झोपायचे, कपडे नावापुरते घालायचे असे अनेक कष्ट केल्यावर व गुरुची सेवा केल्यावर पार होण्याची संधी मिळत असे. पण एकदा पार झालेला शिष्य चांगली तयार व्हायचा. तुम्हा लोकांना काहीही न करता सहजा-सहजी आत्मसाक्षात्कार मिळाला. पण तुमच्या डोक्यात अजूनही पूर्वीच्याच गोष्टी रुतून बसल्यासारख्या टिकून आहेत; त्याच गोष्टी तुम्हाला छेदून टाकायच्या आहेत. म्हणून मी

त्यांच्यावर इतका जोर देत आहे. त्यासाठी तुम्हाला घरदार सोडण्याची जरूर नाही, पण आपल्यामधील हे दोष हळुहळु कमी करण्याचा प्रयत्न तुम्ही केला पाहिजे व आपल्यामध्ये एक प्रकारचा आस्वाद निर्माण केला पाहिजे. माझ्या म्हणण्याचा अर्थ एवढाच आहे की आपण शरीराचे गुलाम बनण्याऐवजी शरीराला आपले गुलाम बनवले पाहिजे. उदा. पलंग असला तरीही जमिनीवर झोपाण्याची मुदाम सवय केली की झोप येईल. शारीरिक आरामदायी राहण्याच्या गोष्टी सोडून घ्याः पुष्कळ जणांना बसचा प्रवास चालत नाही, मग ते कुणाच्या ना कुणाच्या तरी कारमधून जाण्याच्या मागे लागतात पण बसमधूनच जाऊन खूप या अशा निर्धाराने बसने जायचा प्रयत्न करत नाहीत. पूर्वीच्या काळी बसनेच सगळीकडे प्रवास करावा लागे, आमच्या लहानपणी तर घरात मोटार असूनही चार-पाच मैल दूर असलेल्या शाळेत पायी जावे लागे, ती घरातली शिस्त होती. मी तर हातात चप्पल घेऊन अनवाणी चालत असे. कारण त्यामुळे जमिनीमधून व्हायदेशिन्स मिळत. तुम्हीसुद्धा चप्पल घुट न घालता थोडे तरी जमिनीवर अनवाणी चाललात तर खूप फायदा होईल. एकंदरीत प्रत्येक गोष्ट आरामात कशी होईल इकडे आपण लक्ष देतो. या तऱ्हेने सर्व तऱ्हेची शारीरिक गुलामगिरी कमी करून हे परम शिवतत्त्व आपल्याला घेऊन करायचे आहे. त्यासाठी कुठल्याही बाह्य गोष्टीची अमुकच कपडे घालायचे, संधि कपडेच हवेत इ. ची काही जरूर नाही. जे आहे त्याचा स्वीकार करायचा त्यात काही बिघडणार नाही. उलट जे आहे त्यात समाधानी रहायला तुम्ही शिकाल. नुकताच गॅस सिलिंडर सोळा रुपयांनी वाढला म्हणून महिलामंडळी आंदोलन करू लागल्या पण नुसत्या पावडरवर पंधरा रुपये खर्च करताना त्यांना काही वाटत नाही. तीच गोष्ट घरातल्या नोकराची, पूर्वी शंभर रुपयांत चालायचे आता त्यांनाही हजार रुपये लागतात वर कपडे वगैरे पण मागतात. पगार वाढला की खर्च वाढतात मग महागाई वाढणारच. सर्वसाधारण समजा व सूजबूज बाळगली तर त्रास होत नाही. म्हणजे शिवतत्त्व सुधारेल. मी गांधीजींच्या आश्रमात होते. त्यांची आश्रमातील शिस्त फार कडक. सडास-बाथरूम स्वतः साफ करायची, कपडे व जेवणाचे वाट स्वतः घुवायचे, जेवणात फक्त उकडलेली भाजी व त्यावर मोहरीचे तेल, एवढा कडकपणा सहन करणारे फार थोडे, बरेच जण थोडे दिवस राहून पसार व्हायचे. या सगळ्या गोष्टींसाठी आस्वाद समजला पाहिजे. मी तर म्हणून की तुम्ही सर्वांनी थोडे दिवस उकडलेल्या भाजाच खाऊन पहा. खाण्यापिण्याच्या गोष्टीमुळे शिवतत्त्व खराब होते व सारी मेहनत बेकार जाते. पूर्वी लोक एखादा दिवस उपास करत. त्या निमित्ताने काही त्या करत पण आजकाल हे बोलणेही अवघड आहे. समाधानी व संतुष्ट राहणीसाठी खाण्यापिण्याच्या व तत्सम गोष्टींची मुळीच जरूरी नाही.

आणखी एक गोष्ट म्हणजे आपल्याकडे जातपातचे प्रकार

अजून चालतात. काथस्थ, ब्राह्मण, हिंदू वगैरे भेदभाव केले जातात. सहजयोगातही ते जाती-जातीचे आपापले गुण बनवून राहतात. जेवायला बोलवायचे तरीही जात पाहून करणार. सहजयोगी झाल्यावर जात कशी शिल्लक राहते? शिवांना जात माहीत नव्हती. बराती म्हणून त्यांनी लुळे पांगळे लोकही बरोबर घेतले. म्हणून शिवतत्त्वाला येण्याच्या पुष्टीने असे जाती-पातीबद्दल कदाच पाळणे चुकीचे आहे. तीच गोष्ट खाण्या-पिण्याची, प्रत्येक जातीला आपापल्या पद्धतीचे जेवण व पदार्थ आवडतात व पाहिजे असतात. वेगवेगळ्या प्रकारचे पदार्थ खाण्यातही रस असतो हे समजून घेण्याऐवजी आपल्याच पद्धतीचे जेवण ठेवण्याचा आग्रह कशासाठी ? सर्व तऱ्हेच्या जेवणाचा स्वाद घेता आला पाहिजे, तो स्वाद रसनेमधून येतो आणि तिथूनच वाचा उमटते. साध्या बोलण्यातही एक प्रकारचा गोडवा दिसून आला पाहिजे नाही तर चेहराच मुळी रावणासारखा दिसला तर बोलणे बघायलाच नको. पुरुषांची आणि स्त्रियांची दोघांचीही हीच तऱ्हा. अशा चमत्कारीक परिस्थितीत शिवतत्त्व कुठे दिसणार ? शिव तर प्रेमाचे महासागर आहेत. शत्रु, राक्षस यांनाही ज्यांनी वरदान दिले त्या शिवांचे तत्त्व आपल्यामध्ये आपण लहान सहान फालतू गोष्टींमध्ये घुटमळत राहिलो तर कसे जागृत होणार ? ज्या तऱ्हेने आपण एकमेकांवर टीका करत राहतो, जात-पातीसारखे भेदभाव करत राहतो त्यामध्ये शिव कसे दिसून येणार ? शिवांच्या प्रेमधारेमध्ये आल्यावर तुम्ही उलटी सुलटी बात करू शकत नाही, त्यात काही अर्थ नाही. तुमच्यामध्ये प्रेम, समज व एकमेकांबरोबरचा आनंद दिसून आला पाहिजे. सहजयोगी एकमेकांत भांडत नाहीत हे खरे, तसेच भेटतात तेव्हा प्रेम वाटतात हेही खरे फक्त खाणे-पिणे, कपडेलेते या वैयक्तिक गोष्टींमध्ये थोडा अधिक समजूतदारपणा तुम्ही दाखवला पाहिजे.

त्यासाठी तुमचे चित्त तुमच्याच हृदयात उतरले तर चांगले होईल. अमेरिकेत तर हे फार जरूरी आहे कारण तिकडे या बाबतीत नाना प्रकारचे थेर चालू चालले असतात व फॅशन म्हणून बदलत राहतात. पण तुम्ही तसे वागणार नाही. आपापल्या ठिकाणी जे सन्मानाने (सादगी) राहतात त्यांचेच नाव होते, इतरांचे नाही. आता तुम्हाला आल्याचा प्रकाश मिळाला आहे आणि त्या प्रकाशात तुम्हाला स्वतःला सुधारून ठीक करायचे आहे. तुम्ही शिवांच्या घरणी आला आहात, तुम्ही स्वतःला धन्य समजा की तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार प्राप्त झाला आहे दुसऱ्याला सुधारण्याच्या मागे न लागता स्वतःला ठीक करत घेता. पूर्वीच्या काळी दोन-चार साक्षात्कारी पुरुष असायचे, तुम्ही आता हजारोनी आत्मसाक्षात्कारी लोक आहात हे लक्षात घ्या. तुमचे बोलणे हृदयापासून आले, त्यात माधुर्य आले की कुणीही तुमच्या बोलण्यावर नाराज होणार नाही. लहान मुले असोत वा वडिलधारी माणसे असोत, तुम्ही त्यांना सुख वाटलेत की स्वतःही सुखी व्हाल. तुम्हाला शिवांचे आशीर्वाद मिळाले की तुम्ही समाधानी होता. मी स्वतः समाधानी आहे का, दुसऱ्याच्या वागण्या बोलण्याने

आपण नाराज होतो का, आपल्याला राग येतो का, मी सारखे दुसऱ्यांचे दोष काढतो का इ. स्वतःतले दोष पहात घेता आणि तुम्हाला स्वतःमधील दोष दिसून आले तरच तुम्ही स्वतःला सुधारू शकता. अंधारामध्ये प्रकाश आला की सर्व नीट दिसते तसे तुम्हाला तुमचेच दोष दिसून येतात; तसे दिसून आल्याशिवाय तुम्ही स्वतःला स्वच्छ कसे करणार ? तसे स्वच्छ झालात की त्या परम पिता परमेश्वराचे दर्शन हृदयात घेऊ शकाल आणि दुसऱ्यांनाही ते दर्शन देऊ शकाल

सर्वाना अनंत आशीर्वाद

(या पुढील भाषण इंग्रजीतून झाले.)

मी या लोकांना शिवतत्त्वाबद्दल सांगत होते. शिवांचे प्रतिबिंब चक्रावर नसून तुमच्या हृदयात आहे. तुमच्याजवळ जे आहे ते एक आरसा आहे, त्या आरशामधे प्रतिबिंब येण्यासाठी तुम्ही तो आरसा स्वच्छ केला पाहिजे, त्या आरशातच प्रतिबिंब येण्यासाठी याच गोष्टीकडे नीट लक्ष दिले पाहिजे. त्या संबंधात मी त्यांना बद्दरिपूबद्दल सांगितले, त्यातल्या पाच रिपू बद्दल मी जास्त बोलले कारण शेवटचा रिपू म्हणजे हाव त्यांच्यापेक्षा तुम्हा पाश्चात्य लोकांसाठी जास्त महत्त्वाचा आहे, कारण त्यांचे जीवनच लालसेने भरलेले आहे आणि श्री शिव त्यांच्या पलीकडे आहेत. म्हणून तुम्ही विशेष लक्षात घ्यायला हवे की तुमच्या हृदयात श्री शिवांचे पूर्ण प्रतिबिंब तुमचे हृदय स्वच्छ झाल्यावरच येणार आहे. द्वेष, मत्सर, शत्रुत्वाची भावना, मोह, लालसा. इ. दोष जर तुमच्यामधून गेले नाहीत तर तुमचे हृदय दगडासारखे होईल आणि त्यामध्ये शिवांचे प्रतिबिंब येऊ शकणार नाही. साध्याच्या या कलियुगामध्ये श्री शिवांचे गुण तुमच्या व्यक्तिमत्त्वातून दिसून आले पाहिजेत. त्या गुणांचा आविष्कार प्रकट होणारे लोक आज फार थोडे आहेत. म्हणून तुम्ही सतत स्वतःकडे पाहणे फार महत्त्वाचे आहे. "माझे काय चुकत आहे, माझे लक्ष कुठे लागले आहे, मी दुसऱ्यांचे दोष न पाहत स्वतःची काळजी घेत आहे का" इ. प्रश्नांकडे जागरूक राहून लक्ष ठेवा. पाश्चात्य लोकांची एक धारणा आहे की इतरांवर टीका करण्याचा त्यांना अधिकार आहे "मला हे आवडत नाही, ते आवडले नाही" अशी सारखी टीका करणे योग्य नाही. हे म्हणणारे तुम्ही कोण ? तुमच्यासाठी कुणीतरी कष्ट घेऊन काही तरी करतो याचा तुम्हाला विसर पडतो आणि वर तुम्ही तुमच्या बोलण्याने त्यालाच दुखावता ! सहजयोग्यांनी अशी भाषा करणे अत्यंत चूक आहे, सहजयोगात त्याला परवानगी नाही, सहजयोगात हे चालणार नाही.

श्री शिवांकडे पहा, त्यांना काहीही चालते; त्यांना सर्व प्रकारची जनावरे आवडतात. त्यांच्या विवाह-समारंभात बराती म्हणून त्यांनी जे लोक बरोबर आणले ते सर्व कुणी आघळे, कुणी लंगडे, कुणी एक पायच नसलेले असे विविध लोक आणले कारण त्यांना त्यांच्याबद्दल सहानुभूति व करुणा होती. ते स्वतःतर शुद्ध आनंदाचा स्रोत आहेत म्हणून तुमचे हृदय जर प्रेमाने व आनंदाने

मुरलेले असेल तरच त्याचे प्रतिबिंब तुमच्या हृदयात पडणाले. म्हणून मी त्या पडरिपूढल बोलले कारण ह्या रिपूचा जोपर्यंत नायनाट होत नाही तोपर्यंत तुमचा आरसा मळलेलाच राहणार.

मी त्या लोकांना (भारतीय) हेहि सांगितले की पाश्चात्य सहजयोगी स्वतःच्या ऐकआरामबद्दल भारतीयाइतके काटेकोर नसत. अगदी समृद्ध अशी जीवन पद्धती असूनही त्यांना काहीही घालते, कुठेही रहाण्यास तयार असतात. त्यांना अशा गोष्टीची फिकीर नसते. ही एक चांगली स्थिती पाश्चात्य सहजयोग्यांनी मिळवली आहे. मी भारतीय सहजयोग्यांनाही त्याचे अनुकरण करण्यास व फालतू गोष्टीमधे चित्त न बांधा घालविण्यास सांगत असते. त्यानेच तुम्ही खऱ्या अर्थाने आत्मसन्मुख व्हाल. तुमच्या आत्म्याचा प्रकाश तुमच्या बागण्या-बोलण्यात पडण्याची सध्याच्या काळात फार जरूरी आहे. तसे झाले तर सहजयोग तुमच्यासाठी फलदायी झाला असे म्हणता येईल. याच परिवर्तनाची म्हणजे मानवी स्थितीपासून आत्मस्थितीला येण्याचीच खाता जरूरी आहे. आजच्या पूजा प्रसंगातून हेच दिसून येत आहे.

पूर्वीच्याकाळचे गुरु शिष्यांची फार कडक परीक्षा घेत असत. त्यांना डोक्यावर उभे रहायला लावत, पाण्यात उभे करत, बैलप्रसंगी त्यांना गुरुच्या हातचा मार खावा लागे. हातकी कडक परीक्षा होऊनही एकाद-दुसऱ्यालाच गुरुकडून आत्मसाक्षात्कार मिळायचा. या सर्व गोष्टींना फार काळ जात असे. म्हणूनच मला वाटू लागले की प्रथमच आत्मसाक्षात्काराचा प्रकाश साधकांना दिला तर त्याच प्रकाशात त्याचे दोष त्यांच्याच नजरेस येतील आणि ही पद्धत यशस्वी झाली हे तुमचे तुम्हाला समजत आहे.

तुम्ही काय करत आहात, इतरांच्यापेक्षा तुम्ही कशांमुळे वेगळे आहात हे तुम्हाला समजत आहे. कारण सदाशिवाने स्थान तुमचे मत, भावना, विचार –यांच्यापलीकडे आहे (डोक्यावर आहे). त्याच्याशिवाय दुसरे काही महत्त्वाचे नाही, नुसती प्रतिक्रिया करत राहण्याने काही मिळणार नाही हे तुम्ही लक्षात घेतल्यावरच हे घटित होणार आहे. काही गोष्टी भारतीयांनी शिकण्याची तर काही इतर गोष्टी परकीयांनी शिकण्याची जरूरी आहे. तुम्ही लोकांनी खूप सुधारणा केली आहे. दारू सोडली, बायकांच्या मागे लागणे बंद केले, तुमचे चित्त स्वच्छ झाले, घ्यसने सोडून दिलीत इ. गोष्टी फार चांगल्या केल्या आहेत पण तरीही थोडे फार दोष जे अजूनही शिल्लक आहेत तेही दूर झाले पाहिजेत व तुम्ही पूर्णपणे स्वच्छ-शुद्ध झाले पाहिजे. मगच तुम्हाला शिवतत्त्व खऱ्या अर्थाने समजणार आहे व त्याच्या आशीर्वादानून तुम्ही आनन्दाच्या महासागरात उतरणार आहात.

परमेश्वराचे सर्वांना आशीर्वाद.